Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 6
अंक- 37

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

8 सफर 1442 हिज्री कमरी 16 तबूक 1400 हिज्री शम्सी 16 सितम्बर 2021 ई...

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सदक़ा देने, (सिला रहमी) नेकी का व्यवहार करना और माल ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

(1436) हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि : मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वे बातें मालूम ही हैं जिनके द्वारा मैं जाहिलियत में गुनाह का अज़ाला किया करता था। अर्थात सदक़ा देना या ग़ुलाम आज़ाद करना या सिला रहमी करना। कयास उनमें भी कोई सवाब होगा? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :तुम इस्लाम में उन्ही नेकियों की वजह से तो दाख़िल हुए हो जो पहले हुई थीं।

(1443) हज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कंजूस और ख़र्च करने वाले की मिसाल उन दो व्यक्तियों की सी है जिन्हों ने दो लोहे के जुब्बे छातियों से हँसलियों तक पहने हुए हैं और जो ख़र्च करने वाला होता है जूँ-जूँ ख़र्च करता जाता है वे जुब्बा उसके बदन पर फैलता जाता है या (फ़रमाया: इतना लंबा हो जाता है कि उसकी उंगलियों को छुपा लेता है और उसके पांव का निशान मिटाता है और कंजूस जो है तो वह जिस वक़्त भी ख़र्च करना नहीं चाहता तो हर स्थान अपनी अपनी जगह पर चिमट कर रह जाता है। वह उसे फैलाना चाहता है परन्तु वह फैलता नहीं है।

(बुख़ारी, भाग 3 पुस्तक ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

इन्सानी ज़िन्दगी का लक्ष्य और उद्देश्य सीधे मार्ग पर चलना और इस की अभिलाषा है। जिसको इस सूरत में इन शब्दों में बयान किया गया है। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ **(अल-फ़ातिह:6,7) अल्लाह हम को सीधा मार्ग दिखा। उन लोगों की जिन पर तेरा इनाम हुआ।**

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा की मुहब्बत और फ़ज़ल

मुहब्बत एक ऐसी चीज़ है कि इन्सान की सांसारिक ज़िन्दगी को जला कर उसे एक नया और पवित्र इन्सान बना देती है। फिर वह वह देखता है जो पहले नहीं देखता था वह वह सुनता है जो पहले नहीं सुनता था। अत: ख़ुदा तआला ने जो कुछ माइदा फ़ज़ल तथा करम का इन्सान के लिए तैयार किया है, इसके प्राप्त करने और लाभ उठाने के लिए सामर्थ्य भी प्रदान किए हैं, यदि वह सामर्थ्य तो प्रदान करता परन्तु सामान न होता तब भी एक दोष था और या सामान तो होता परन्तु सामर्थ्य न होता,परन्तु नहीं,यह बात नहीं है। सामर्थ्य भी दिया और सामान भी उपलब्ध किया। जिस तरह पर एक तरफ़ रोटी का सामान हो दूसरी तरफ़ आँख,ज़बान,दाँत और अमाश्य दे दिया और जिगर और अंगों को काम में लगा दिया और उन समस्त कामों की नींव ख़ुराक़ पर रख दी। यदि अंदर ही कुछ न जाएगा तो दिल में ख़ून कहाँ से आएगा। कैलूस कहाँ से बनेगा

इसी तरह पर सबसे प्रथम उसने यह फ़ज़ल किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस्लाम ऐसा सम्पूर्ण धर्म देकर भेजा और आपको ख़ातमन्नबिय्यीन ठहराया और क़ुरआन शरीफ़ ऐसी सम्पूर्ण और ख़ातमुल किताब प्रदान फ़रमाई। और अब क़यामत तक न कोई किताब आएगी और न कोई नया नबी शरीयत ले कर अएगा। फिर जो शक्तियां सोच और फ़िक्र की हैं। उनसे यदि हम काम न लें और ख़ुदा तआला की तरफ़ क़दम न उठाएं तो कितनी सुस्ती और काहली और न शुक्री है।

इन्सानी ज़िन्दगी का उद्देश्य

ध्यान दो कि अल्लाह तआला ने इस पहली ही सूरत में हमारे लिए कितने उत्तम तरीका से फ़ज़ल का मार्ग बता दिया है। इस सूरत में जिसका नाम ख़ातमुल-किताब और उम्मुल-किताब भी है। स्पष्ट रूप से बता दिया है कि

शेष पृष्ठ 10 पर

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ यह आयत इस्लाम की सच्चाई का एक ज़बरदस्त प्रमाण है क़ुरआन-ए-मजीद के अल्लाह के ओर से होने पर कितनी बड़ी शहादत है कि क़ुरआन-ए-करीम उम्मियों (अनपढ़ लोगों) में आता है और हर प्रकार से सुरक्षित रहता है परन्तु तौरात और इंजील अपने युग की इलमी क़ौमों में आईं लेकिन सुरक्षित नहीं रह सकीं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत हिजर आयत 10 اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

यह आयत इस्लाम की सदाक़त का एक ज़बरदस्त सबूत है और यदि कोई बेतास्सुब इन्सान इस आयत पर ग़ौर करे तो समझ सकता है कि यह दावा इन्सानी नहीं। समस्त मुफ़स्सिरीन सहमत हैं कि यह सूरत मक्की है। इब्ने हशाम का वर्णन है कि यह आयत दावा-ए-नुबूव्वत के चौथे वर्ष में नाज़िल हुई ... नई तहक़ीक़ वाले अरब और यूरोपियन लेखक मुफ़स्सिरीन के साथ मिल कर सर्वसहमति से कहते हैं कि यह सूरत मक्की है। मक्की ज़िंदगी के अंतिम वर्ष भी निहायत ही ख़तरनाक थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथियों समेत शौब अबी तालिब में क़ैदी थे जबकि मुस्लमानों को अपनी हिफ़ाज़त के लिए जगह नहीं मिलती थी। ऐसे वक़्त में अल्लाह तआला का यह फ़रमाना कि फ़रिश्तों की क्या ज़रूरत है, हम ख़ुद उसकी हिफ़ाज़त करेंगे कितना ज़ोरदार और पुर शौकत दावा है। वाक्य (اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ) की ताक़त को वही लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं जो अरबी जानते हैं। क्या यह अजीब बात नहीं कि जब मुस्लमान ख़ुद घिरे हुए थे और उन की जान के लाले पड़े हुए थे, कहा जाता है कि तुम सारा ज़ोर लगालो और क़ुरआन-ए-मजीद के मिटाने के लिए पूरी ताक़त ख़र्च कर दो, हम ख़ुद उस की हिफ़ाज़त करेंगे और एक दिन ऐसा आता है कि इन मुख़ालफ़तों के बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 6)

हुकूमती बैंकों में रक़म जमा करवाने और इस रक़म पर मिलने वाले मुनाफ़ा को ज़ाती इस्तिमाल में लाने के बारे में एक प्रश्न पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ द्वारा दिया गया उत्तर।

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अलफ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

प्रश्न : हुकूमती बैंकों में रक़म जमा करवाने और इस रक़म पर मिलने वाले मुनाफ़ा को ज़ाती इस्तिमाल में लाने के बारे में मुहतरम नाज़िम साहब दारुल इफ़्ता रब्वाह के एक प्रश्न पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 12 नवंबर 2017 ई. में निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस मसले पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह तआला के समय में ख़िलाफ़त में जो फ़ैसला हुआ था, मेरा स्टैंड भी उसी के अनुसार है।

(नोट नक़ल करने वाले की ओर से : हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह तआला के ख़िलाफ़त के समय में इस मसला पर होने वाला फ़ैसला निमंलिखित है)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह के ख़िलाफ़त के समय में सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान की तरफ़ से इस मसला पर निमंलिखित सिफ़ारिशात हज़ूर की ख़िदमत अक़्दस में पेश की गईं :

सदर अंजुमन अहमदिया बैंकों में जमा शूदा रक़ूम पर किसी किस्म का सूद नहीं ले रही। और न ही P. F की रक़म ऐसे बैंकों में जमा कराई जा रही है, जिनका कारोबार या आमदनी का माध्यम सूद पर आधारित हो। बल्कि हुकूमत की क़ौमी बचत की स्कीमों के तहत क़ौमी इदारा में लगाई गई हैं। यह इदारा अपने पूंजी को क़ौमी रफ़ाही कामों में लगाता है (न कि सूदी कारोबार पर इसके नतीजा में अर्थव्यवस्था में तरक़्क़ी होती है और रोज़गार के ज़्यादा अवसर पैदा होते हैं। जो हुकूमत के revenue में बढ़ोतरी का कारण बनते हैं। इस तरह हुकूमत अपने depositor को भी अपने मुनाफ़ा में शरीक कर लेती है, जिसे हुकूमत मुनाफ़ा का नाम देती है। जब depositor को अपनी रक़ूम की ज़रूरत होती है, वह रक़म वापिस भी ले लेता है।

बैंक और क़ौमी बचत स्कीमों के इस अंतर के आधार पर ही सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमाहुल्लाह तआला की आज्ञा से इस क़ौमी इदारा में P.F की रक़म लगाई गई है। इसी तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की आज्ञा से बिलाल फ़ंड और तज़किया अम्वाल फ़ंड की रक़ूम बचत स्कीमों में लगाई गई हैं।

मुफ़्ती सिलसिला अहमदिया (हज़रत मलिक सैफ़ुर्रहमान साहब रहमाहुल्लाह) के नज़दीक भी हुकूमत ने जो बचत की स्कीमें जारी की हुई हैं उनमें हिस्सा लिया जा सकता है। जैसा कि उन्होंने तहरीर किया है

"यदि कोई चाहे तो हुकूमत ने बचत की जो स्कीमें जारी की हुई हैं उनमें हिस्सा ले सकता है और उनमें जो मुनाफ़ा मिलता है उसे अपने इस्तिमाल में ला सकता है।"

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान में इस वक़्त कोई मुतबादिल निज़ाम या महफ़ूज़ इदारे मौजूद नहीं। जिनमें पूर्ण संतुष्टि के साथ पूंजी लगाई जा सके। जहां पूंजी महफ़ूज़ हो, नफ़ा बख़श हो या नफ़ा बख़श नहीं तो कम से कम वक़्त गुज़रने के साथ रुपया की क़ीमत में आने वाली कमी से पूंजी प्रभावित न हो। (इस लिए बैंकों में रुपया जमा कराने की बजाय जहां रुपया ही के लेन-देन का सपष्ट सूदी कारोबार होता है, उन स्कीमों में रुपया लगाया गया है, जिनमें पूंजी को भलाई के निमार्ण के कामों पर ख़र्च करने की वजह से हुकूमत सूद से पाक क़रार देती है। या कम से कम वे बैंकों की निसबत यक़ीनी सूदी कारोबार नहीं करतीं)

एक संभवा शक्ल यह भी हो सकती है कि जमाअत अपनी पूंजी से ख़ुद ऐसे कारोबारी मंसूबे जारी करे जो यक़ीनी तौर पर सूद की मिलावट से पाक हों। परन्तु देश की वर्तमान फ़िज़ा जिसमें से जमाअत गुज़र रही है, ऐसी पूंजी निवेश के लिए अभी मुवाफ़िक़ नहीं।

इस तरह मानो क़ौमी बचत स्कीमों में पूंजी कारी एक बेचैनी का रंग रखती है। जिसके विपरीत कोई मुतबादिल निज़ाम पूंजीकारी का देश में मौजूद नहीं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह तआला ने सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान की सिफ़ारिशात को 13 अगस्त 1987 ई. को मंज़ूर करते हुए तहरीर फ़रमाया "ठीक है"

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लौंडियों के बारे में तफ़सीर-ए-कबीर में वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो का मौक़िफ़ तहरीर कर के इस मसला पर मज़ीद रोशनी डालने की दरख़ास्त की तथा लजना इमाइल्लाह पाकिस्तान की इल्मी रैली के अवसर पर दिखाई जाने वाली एक दस्तावेज़ी फ़िल्म में एक डेढ़ मिनट तक म्यूज़िक बजने की शिकायत भी की। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इन उमूर का अपने मकतूब तिथि 21 फरवरी 2018 ई. में निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर: लोंडियों से निकाह के विषय में आपका मौक़िफ़ तफ़सीर कबीर में वर्णन किए गए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन फ़र्मूदा तफ़सीर के अनुसार बिल्कुल दरुस्त है। और यही मौक़िफ़ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो का भी था कि लौंडियों से निकाह ज़रूरी है।

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में मेरा भी यही मौक़िफ़ है कि इस्लाम के इबतिदाई ज़माना में जबकि इस्लाम के दुश्मन मुस्लमानों को तरह तरह के ज़ुल्मों का निशाना बनाते थे और यदि किसी ग़रीब मज़लूम मुस्लमान की औरत उनके हाथ आ जाती तो वे उसे लौंडी के तौर पर अपनी औरतों में दाख़िल कर लेते थे। इसलिए जज़ा جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا की क़ुरआन की शिक्षा के मुताबिक़ ऐसी औरतें जो इस्लाम पर हमला करने वाले लश्कर के साथ उनकी सहायता के लिए आती थीं और इस ज़माना के रिवाज के अनुसार जंग में बतौर लौंडी के क़ैद कर ली जाती थीं और फिर दुश्मनों की ये औरतें जब क्षतिपूति की अदायगी या आपसी पत्राचार के तरीक़ को इख़तियार कर के आज़ादी भी प्राप्त नहीं करती थीं तो ऐसी औरतों से निकाह के बाद ही शरीरिक सम्बन्ध क़ायम हो सकते थे। लेकिन इस निकाह के लिए उस लौंडी की रजामंदी ज़रूरी नहीं होती थी। इसी तरह ऐसी लौंडी से निकाह के नतीजा में मर्द के लिए चार शादीयों तक की आज्ञा पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था अर्थात एक मर्द चार शादीयों के बाद भी मज़कूरा किस्म की लौंडी से निकाह कर सकता था। लेकिन यदि इस लौंडी के हाँ बच्चा पैदा हो जाता था तो वे उम्मुल वलद (बच्चे की माँ) के तौर पर आज़ाद हो जाती थी।

दूसरा नुकता-ए-नज़र जिस के अनुसार मुस्लमानों पर हमला करने वाले दुश्मन के लश्कर में शामिल ऐसी औरतें जब इस ज़माना के रिवाज के मुताबिक़ मुस्लमानों के क़बज़ा में बतौर लौंडी के आती थीं तो उनसे शारीरिक सम्बन्ध के लिए रस्मन किसी निकाह की ज़रूरत नहीं होती थी, भी ग़लत नहीं है। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ और अवसर पर ऐसी लौंडियों के बारे में उत्तर देते हुए इस मौक़िफ़ को भी वर्णन फ़रमाया है। इसी तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमाहुल्लाह तआला ने भी कुछ मजालिस-ए-इर्फ़ान में और दर्सुल क़ुरआन में लौंडियों के मसला की तफ़सीर करते हुए उसी मौक़िफ़ को वर्णन फ़रमाया है कि इन लौंडियों से शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए रस्मन किसी निकाह की ज़रूरत नहीं होती थी।

यहां पर मैं इस बात को भी वर्णन कर देना ज़रूरी समझता हूँ कि क़ुरआन-ए-करीम के ऐसे उमूर की तफ़सीर जिनका ज़माने से सम्बन्ध हो, उनमें ख़लिफ़ा की आरा का मुख़्तलिफ़ होना कोई काबिल एतराज़ बात नहीं बल्कि यह हर ख़लीफ़ा का अपना अपना फ़हम-ए-क़ुरआन

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैं समस्त सेवक का धन्यवाद करता हूँ, पुरुषों का भी, महिलाओं का भी कि इन प्रतिकूल हालात में और .....
मौसम की शिद्दत ... के बावजूद सबने बेनफ़्स हो कर काम किया है और जलसे की डयूटियों का हक़ अदा कर दिया है

जलसा सालाना बर्तानिया 2021ई. के बारे में मुख़्तलिफ़ देशों से प्राप्त होने वाले अपनों और ग़ैरों की ग़ैरमामूली भावनाओं तथा विचारों का जलसे को सुनने के कारण ख़ुश करने वाले परिणामों का वर्णन

अन्य भी एम. टी. ए से प्रभावित हैं और जो दीनी आहार से फ़ायदा उठाना चाहते हैं वे इस से फ़ायदा उठाते हैं और अगर रुहानी लिहाज़ से तरक़्क़ी करनी है तो यही एक तरक़्क़ी का रहस्य्य है, अहमदियों को भी चाहिए कि एम. टी. ए. की तरफ़ ज़्यादा ध्यान दें
इस वर्ष पहली मर्तबा लाईव स्ट्रीमिंग (live streaming) के माध्यम से मुख़्तलिफ़ जमाअतें अपनी-अपनी जगहों पर बैठ कर जलसों में शामिल हुईं
अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा के अतिरिक्त जलसा सालाना के प्रसारण कुछ अन्य स्थानीय टीवी चैनल्ज़ पर भी प्रकाशित किए गए
अफ़्रीक़ा में पच्चास मिलियन लोगों से अधिक की भाषाओँ हाउसा में पहली दफ़ा जलसा सालाना की कार्रवाई का सीधे अनुवाद किया गया
अल्लाह तआला इस जलसे के लम्बे समय वाले परिणाम भी पैदा फ़रमाए और पवित्र रूहों को अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम की तरफ़ पहले से बढ़कर तवज्जा पैदा हो और तथाकथित ओलमा के उपद्रवों से जमाअत को और समस्त पवित्र रूहों को सुरक्षित रखे
इस्लाम को इस वक़्त एक लीडर की ज़रूरत है और वह जमाअत अहमदिया के पास है ख़लीफ़ा की सूरत में और इसी पर समस्त आलम-ए-इस्लाम इकट्ठा हो सकता है
अन्तराल के दौरान सब उपस्थित गणों को मुअल्लिम साहिब ने शरायत बैअत स्थानीय भाषा में अनुवाद करके सुनाएँ, इस ग़ैर अज़ जमाअत ने कहा कि यह तो इस्लाम का ख़ुलासा है और इस में समाजी ज़िंदगी गुज़ारने के बारे में अहसन रंग में मार्गदर्शन है, उन्होंने कहा कि इस पर अमल करना तो हर एक के लिए बहुत अहम और ज़रूरी है, इस लिए जलसा के बाद उन्होंने बैअत कर ली
जो लोग जमाअत को काफ़िर कहते हैं और दहश्त गर्द तंज़ीम कहते हैं उनका उत्तर ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाली आयत है जो बड़े शब्दों में स्टेज की दीवार पर लिखी थी, अब इन शा अल्लाह एम. टी. ए. के माध्यम से जमाअत के सम्बन्ध में काफ़ी ग़लत-फ़हमियाँ दूर होंगी
इस वर्ष के मुनफ़रद इंतिज़ाम के साथ होने वाले जलसे ने अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के ऐसे दरवाज़े खोले हैं जिस से फिर इन्सान अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी करते हुए उस के आगे झुकता चला जाता है

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 अगस्त 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्हम्दुलिल्ला पिछले जुम्मा को जमाअत अहमदिया बर्तानिया का जलसा सालाना एक वर्ष के अन्तराल के बाद या कहना चाहिए दो वर्षों के बाद शुरू हो कर तीन दिन तक अपने रुहानी माहौल के दृश्य दिखाता हुआ पिछले इतवार को समापन को पहुंचा। 2020 ई. में तो कौरोना की महामारी की वजह से जलसा नहीं हो सका था और जलसा की प्रशासन भी यह समझती थी कि क्योंकि हालात अभी भी वही हैं इसलिए इस वर्ष भी जलसा नहीं होगा और इस कारण से तैयारी की तरफ़ भी तवज्जा नहीं थी जिसका मैंने पिछले ख़ुतबा में वर्णन भी कर दिया था लेकिन बहरहाल जब उन्हें कहा गया कि जलसा इन शा अल्लाह आयोजित होगा तो उन्होंने तैयारी शुरू कर दी लेकिन मुझे यही लगता था कि पूरे दिल से तैयारी नहीं कर रहे। मुझे फ़िक्र थी कि प्रशासन जब इस तरह relaxed है तो सेवक भी इस सोच के मालिक न हों लेकिन अल्लाह तआला से यह उम्मीद भी थी कि वह इन शा अल्लाह जलसे का इंतिज़ामात बेहतर करवा देगा और काम करने वाले भी मिल जाऐंगे। इसलिए मुझे एक अवसर पर प्रशासन को ज़्यादा ज़ोर से, सख़्ती से यह कहना पड़ा कि अगर आप लोग इस तरह बेदिली से काम करते रहे और इस सोच में रहे कि पता नहीं जलसा होता है कि नहीं होता और नाउम्मीदी ज़्यादा ज़ाहिर हो रही हो तो फिर मैं नया प्रशासन निर्धारित कर देता हूँ। बहरहाल मेरी इस बात ने उन्हें एक झटका दिया और तेज़ी से काम शुरू हो गया, जबकि लेट शुरू हुआ। और सेवक जो थे, जो हमारे निचली सतह पर काम करने वाले सेवक हैं असल तो वही force है, वही मैन पावर है, वे तो लगता था पहले से बेचैन थे। फ़ौरी तौर पर जलसे के इंतिज़ाम के लिए भी हर तरफ़ से रज़ाकार आने लग गए। जलसे के दौरान डयूटी वालों की भी लाइनें लग गईं। अब यह मुश्किल थी कि क्योंकि यह जलसा छोटे पैमाने पर होना है इसलिए सेवक की स्लैक्शन किस तरह की जाए। बहरहाल इसके लिए पुरुषों ने भी और लजना ने भी सेवक चुने। लजना ने तो शायद डयूटियां देने के लिए पांचवां हिस्सा लिया और पुरुषों ने शायद अपने सेवक का तीसरा हिस्सा कम कर दिया। जो इस काम के लिए नहीं लिए गए वे निराश भी हुए कि उन्हें ख़िदमत का अवसर नहीं मिला। तो यहां सबसे पहले तो मैं इन समस्त पुरुषों, महिलाओं, लड़कों, लड़कियों और बच्चों को यह कहना चाहता हूँ ,क्योंकि बच्चों की भी डयूटियां लगती थीं, कि अल्लाह तआला नीयतों का अज्र देता है। आपकी नीयत जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत करने की थी वह पूरी हो गई और जबकि आपको अवसर नहीं मिल सका लेकिन अल्लाह तआला आपकी नीयत की वजह से आपको अज्र से वंचित नहीं करेगा। बहरहाल यह दुआ है अल्लाह तआला इन सबको इस ख़िदमत के जज़बा का बेहतरीन अज्र अता फ़रमाए।

दूसरा जैसा कि मेरा तरीक़ है कि जलसे के बाद के जुमा में सेवक का भी धन्यवाद करता हूँ जो मुख़्तलिफ़ विभागों में काम कर रहे थे या कर रहे होते हैं। लोग भी मुझे लिख रहे हैं और दुनिया से लिखने वाले भी इन रज़ाकारों का धन्यवाद कर रहे हैं जिनकी जहां भी डयूटी थी उन्होंने वहां उस का हक़ अदा करने की कोशिश की। बारिश की वजह से एक वक़्त में पार्किंग से कारें निकालना भी एक बड़ा मसला हो गया था। वहां रज़ाकारों ने ग़ैरमामूली काम किया है और वास्तव में कारें उठा कर ही कीचड़ में से बाहर रखी हैं और इस में उनके साथ कई दफ़ा दूसरे विभागों के सेवक भी जो फ़ारिग़ होते थे शामिल हो जाते थे। कई लोगों ने मुझे लिखा कि हम शामिल होते रहे। बहरहाल फिर बाद में इस पार्किंग की सूरत-ए-हाल देख कर दूसरी जगह पार्किंग का इंतिज़ाम हो गया था लेकिन बहरहाल पहले और दूसरे दिन या दूसरे दिन कुछ वक़्त के लिए जो कारें वहां आई थीं उनको वहां से निकालना बड़ा मुश्किल था और इस मुश्किल को कैमरे की आँख ने देख लिया और एम. टी. ए. ने दुनिया को दिखा भी दिया जिससे दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में अपने और ग़ैर जो यह दृश्य देख रहे थे उन्होंने बड़ी हैरत का इज़हार किया है बल्कि ग़ैर अज़ जमाअत और ग़ैर मुस्लिमों ने तो इस दृश्य को देख कर कहा कि आज की दुनिया में यह दृश्य अविश्वसनीय है। कोई अफ़्सर है या मज़दूर, सब कारों को कीचड़ से निकालने के लिए ख़ुद कीचड़ में लत-पत हैं। ये वे लोग हैं जो जिन्नों की तरह काम करते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को अल्लाह तआला ने अता फ़रमाए हैं।

फिर इसी तरह दूसरे विभाग हैं, सफ़ाई का विभाग है, खाना खिलाने का है, खाना पकाने, रोटी पकाने का है। फिर सबसे अहम शुरू में जलसा के इंतिज़ामात का, मारकियां लगाने का ; दूसरे ट्रैक इत्यादि बिछाने का जो काम था या जलसे का जो पूरा इंतिज़ाम था उसको करने का जो इबतिदाई काम था उसके लिए रज़ाकार

मुस्तक़िल कई हफ़्ते आते रहे। फिर अब वाइंड अप के लिए भी कई दिन दे रहे हैं। तो इस तरह जो मुख़्तलिफ़ विभाग हैं इन सब के काम देखकर दुनिया जो एम. टी. ए. और लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से जलसा देख रही थी वे बहुत प्रभावित हुए हैं। आने वाले मेहमान भी शुक्राने के जज़बात लिए हुए थे और एम. टी. ए. ने दुनिया को जो दृश्य दिखाए और प्रोग्राम दिखाने के लिए मुख़्तलिफ़ दृश्य दिखाने के लिए जो मुख़्तलिफ़ प्रोग्राम बनाए और बड़ी मेहनत की है, इस का भी एम. टी. ए. ने हक़ अदा कर दिया है और न केवल जलसा दुनिया को दिखाया बल्कि दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में इजतिमाई तौर पर जलसे की कार्रवाई देखने वालों को हमें जलसा गाह में दिखा दिया और समस्त दुनिया को भी दिखा दिया। तो जलसे की यह कार्रवाई जो कारकुनों के इबतिदाई काम से लेकर दौरान-ए-जलसा काम करने वाले, फिर जलसा गाह के अंदर जो इलमी और तर्बीयती प्रोग्राम, तक़ारीर इत्यादि थीं उनको दिखाना यह एम. टी. ए. ने ऐसे माध्यम से दिखाया कि समस्त दुनिया के लोग, देखने वाले अहमदी और ग़ैर भी आश्चर्यचकित रह गए हैं और शुक्रगुज़ार भी हैं कि हमें ये दृश्य देखने को मिले। यह एक विचित्र विश्वव्यापी घर का नक़्शा खींच दिया था।

अत: में समस्त सेवक का, पुरुषों का भी, महिलाओं का भी धन्यवाद करता हूँ कि इन प्रतिकूल हालात में और एक लिहाज़ से उन के लिए तो हंगामी फ़ैसला हुआ है और फिर मौसम की शिद्दत। इन सब के बावजूद सबने बेनफ़्स हो कर काम किया है और जलसे की डयूटियों का हक़ अदा कर दिया है और दुनिया में इस जलसे को देखने वालों की तरफ़ से भी धन्यवाद करता हूँ। बहुत सारे पत्र शुक्रिया के मुझे आ रहे हैं। मेरा ख़्याल था कि सेवकों का धन्यवाद कर के आज फिर अपनी रूटीन के अनुसार ख़ुतबे का जो मज़मून है वही वर्णन करूँगा लेकिन दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से जलसे के और उसके सुनने के बाद ख़ुशकुन नताइज, अपनों और ग़ैरों के ग़ैरमामूली जज़बात के इज़हार की इतनी बड़ी संख्या में रिपोर्टस आ रही हैं, पत्र आ रहे हैं तो मैंने सोचा कि इस साल भी हमेशा की तरह उन फ़ज़लों का वर्णन आज के ख़ुतबा में कर दूं। समस्त वर्णन करना तो संभव नहीं। कुछ मैंने लिए हैं।

इस वर्ष के मुनफ़रद इंतिज़ाम के साथ होने वाले जलसे ने अल्लाह तआला के फ़ज़लों के ऐसे दरवाज़े खोले हैं जिससे फिर इन्सान अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी करते हुए उस के आगे झुकता चला जाता है। इन समस्त हालात के बावजूद कैसे-कैसे फ़ज़ल अल्लाह तआला जमाअत पर फ़र्मा रहा है। एक कमी का इज़हार उमूमन लोगों ने किया है कि इस वर्ष आलमी बैअत नहीं हुई जिसका उन्हें बड़ा इंतिज़ार था। इन हालात में तो बहरहाल यह मुश्किल भी था कि बैअत की जाती, मजबूरी थी।

अब मैं मुख़्तसर कुछ रिपोर्टस और कुछ का वर्णन करता हूँ। इस साल पहली मर्तबा जमाअतें लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से जलसे में शामिल हुईं अर्थात अपनी अपनी जगहों पर बैठ कर जलसा सुन रही थीं और यहां जलसा गाह में भी स्क्रीन पर लोग नज़र आ रहे थे। यू.के में पाँच स्थानों पर इजतिमाई तौर पर यह इंतिज़ाम था और कुछ दूसरे देशों में कई घंटों के वक़्त के फ़र्क़ के बावजूद भी वहां बैठे इजतिमाई तौर पर जलसा सुन रहे थे जिनमें आस्ट्रेलिया है, इंडोनेशिया है, गोइटेमाला है, बंगला देश इत्यादि शामिल हैं। यू.के के अतिरिक्त 22 देशों में सैंतीस स्थानों पर लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से लोग जलसा सालाना में शामिल हुए थे और महिलाओं की तरफ़ से भी इस दफ़ा लाईव स्ट्रीमिंग का जो पहली दफ़ा इंतिज़ाम हुआ था उस की वजह से महिलाओं ने भी मुख़्तलिफ़ देशों से बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया है और एक अंदाज़े के अनुसार जो महिलाओं का सैशन था, उनकी तक़रीरें थीं, महिलाओं के इस प्रोग्राम को भी तीस पैंतीस हज़ार के क़रीब महिलाओं ने देखा और सुना। इन शामिल होने वाले देशों में अमरीका है, कैनेडा है, गोइटेमाला, कहीं दो जगह, कहीं तीन जगह, कहीं चार जगह मुख़्तलिफ़ सैंटर्ज़ बने हुए थे। गयाना है, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, बंगलादेश, मारीशस, कबाबीर, इंडिया, बुर्कीना फासो, घाना, नाईजीरिया, गेम्बया, तनज़ानिया, फ्रांस, स्विटज़रलैंड, जर्मनी, स्वीडन, बेल्जियम, फिनलैंड, हॉलैंड इत्यादि शामिल हैं।

नाईजेरिया में एक ग़ैर अहमदी दोस्त ईसा साहिब जलसे के दौरान तीनों दिनों में मेरे जो खुत्बात थे उनको सुनने के लिए मिशन हाऊस में आते रहे। कहते हैं कि इस से क़बल मैंने सुन रखा था कि जमाअत अहमदिया इस्लाम के ख़िलाफ़ है और उन्होंने मस्जिद में टी.वी रखा हुआ है जो कि जायज़ नहीं लेकिन जलसे को देखने के बाद मालूम हुआ कि अगर सब मुस्लिम दुनिया ऐसी हो जाए जैसे अहमदियत इत्तिहाद से रहती है और इस्लाम का संदेश पहुंचा रही है तो मुस्लमान इतने मज़बूत हो जाएं कि दुनिया की कोई ताक़त इस्लाम के ख़िलाफ़ न बोल सके। जमाअत अहमदिया में जो इत्तिहाद और प्रेम है वह मैंने जलसा में देखा है जो मेरी नज़र में सच्चाई की एक दलील है।

फिर ज़ेमबिया से अहमदी अहबाब और नौमुबाइन के अतिरिक्त बाअज़ ग़ैर अज़ जमाअत ने भी जलसा देखा। वहां एक जगह पैंतीस ग़ैर अज़ जमाअत लोग जमा थे। एक ईसाई टीचर ने जलसे की कार्रवाई सुन कर, देखकर यह वर्णन किया कि आज मैं जलसे की कार्रवाई सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। मुझे इस्लामी तालीमात का इलम हुआ है और कहते हैं कि मेरी अक़्ल-ओ-फ़हम के अनुसार अब मुझे पता लगा कि इस्लाम ही एक सच्चा मज़हब है और दुनिया में कोई ऐसा मज़हब नहीं जो ज़रूरतमंदों की मदद करे। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

फिर गीबोन के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि ग़ैर मुस्लिम पुलिस अफ़्सर अपनी पत्नी के साथ जलसे की कार्रवाई सुनने के लिए मिशन हाऊस आए। इस से पहले वे जमाअत में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं लेते थे लेकिन जलसे पर एक लुबनानी नौमुबाईन के क़बूल अहमदियत का वाक़िया सुना तो पूछने लगे कि जलसे के बाद में किस तरह एम. टी. ए. देख सकता हूँ? इस पर उनको बताया गया कि यूट्यूब के माध्यम भी एम. टी. ए. देख सकते हैं तो उन्होंने उसी वक़्त अपने मोबाइल पर यूट्यूब निकाल कर एम. टी. ए. फ्रैंच चैनल निकाला और जलसा देखने लग गए। कहने लगे कि अब मैं इस चैनल पर जमाअत अहमदिया के बारे में मज़ीद सीखूंगा।

नाईजेरिया से एक ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त ने जलसे की कार्रवाई सुनने के बाद कहा कि इस जलसे की कार्रवाई से मुझे यक़ीन आ गया है कि अगर दुनिया में कोई सच्चा फ़िर्क़ा है तो वह अहमदिया जमाअत ही है। मैं जल्द इस में शामिल हो जाऊँगा। एक ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त ने जलसा के हवाले से तास्सुरात में कहा निसंदेह यह जमाअत सच्चों की जमाअत है यह ईमान वालों की जमाअत है। मैंने देखा कि शदीद बारिश में भी रज़ाकार अपने कामों में मगन थे और मेहमानों के लिए आसानियां पैदा कर रहे थे और फिर इसी तरह मेरे महिलाओं के भाषण से कहते हैं बड़ा प्रभावित हुआ।

जापान के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि हीरोशीमा से सम्बन्ध रखने वाले एक ग़ैर अज़ जमाअत जापानी मशीमा ओसामो (macshima osamu) साहिब। जब मैं जापान गया तो हीरोशीमा भी गया हूँ तो यह वहां थे और उन्होंने मेज़बानी की थी। 2017 ई. की पीस कान्फ्रैंस में भी शामिल हो चुके हैं। कहते हैं कि मैं भी जलसा देख रहा हूँ। कहते हैं आज 6 अगस्त का ख़ुतबा भी सुना। इस पर मुझे जापान के लिए जमाअत की ख़िदमात याद आ गईं कि किस तरह जमाअत के दूसरे ख़लीफ़ा, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने जुमा के दिन ही10 अगस्त 1945 ई. को हीरोशीमा की ऐटमी तबाही के बारे में आवाज़ बुलंद की थी। यह आवाज़ हीरोशीमा के हक़ में बुलंद होने वाली पहली आवाज़ों में से थी। इस के बाद मौजूदा ख़लीफ़ा का दौरा हीरोशीमा हुआ और इस अवसर शांति और अमन का संदेश भी मेरे लिए बहुत विशेष अर्थ रखता है। आज हीरोशीमा के दिन के अवसर पर एम. टी. ए. देखते हुए एक तो मेरी यह ख़ाहिश है कि एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा की तरह एम. टी. ए. जापान भी जल्द क़ायम हो और दूसरा जलसा का माहौल और दुनिया-भर से लोगों का इजतिमा देखकर मेरे दिल में दिन प्रतिदिन यह एहसास उजागर होता है कि दुनिया को एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा करने के लिए और दुनिया में अमन-ओ-सलामती के क़ियाम के लिए जमाअत अहमदिया का किरदार कितना अहम है।

लूसाका (ज़ेमबिया) से एक ग़ैर अज़ जमाअत उस्ताद हैं। वह कहते हैं आज हमने आपके ख़लीफ़ा से एक बात सीखी है कि इस्लाम में औरत को आज़ाद राय देने का पूरा हक़ हासिल है और इस्लाम औरत को शादी के सिलसिला में अपनी पसंद का साथी चुनने का हक़ देता है परन्तु कुछ मुआशरों में ज़बरदस्ती की शादियां करवा दी जाती हैं और इन्सानी हुक़ूक़ का ख़्याल नहीं रखा जाता। फिर यह कहा कि केवल इस्लाम वाहिद धर्म है जिसने औरत के हुक़ूक़ पर-ज़ोर दिया है। कहते हैं जहां इस्लाम मर्द को एक से ज़्यादा शादियों की इजाज़त देता है वहां मर्द को भी यह ताकीद की गई है कि इन्साफ़ का दामन हाथ से नहीं छोड़ना। अगर इन्साफ़ नहीं कर सकते तो फिर एक पर ही इकतिफ़ा करो। यह बहुत ख़ूबसूरत इस्लामी तालीम है और अहमदियत ही इसकी अलमबरदार है।

फिर नाईजेरिया के रीजन तैसावा से ग़ैर अहमदी दोस्त ममन ग़ाली साहिब कहते हैं मेरा यह पहला अवसर था और बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। यह मिसाल अगर बाक़ी मुस्लमान फ़िरक़े भी पकड़ लें तो निसंदेह दुनिया में मुस्लमान प्रगतियों की मनाज़िल तै कर लें। फिर नाईजेरि से एक ग़ैर अहमदी इंजनीयर उसामा साहिब हैं। कहते हैं

सबसे ज़्यादा इस बात ने प्रभावित किया कि इतने सारे मुल्कों की नुमाइंदगी और मुख़्तलिफ़ अफ़राद भाषा और स्थान के अलग अलग होने के बावजूद जिस इताअत का मुज़ाहरा कर रहे थे और कौरोना जैसी महामारी के उतना perfect इंतिज़ाम देखने योग्य थे।

नाईजेरिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि एक ग़ैर अहमदी मेहमान मर्यम साहिबा कहती हैं कि आज इमाम जमाअत अहमदिया का ख़ुतबा सुन कर मुझे महिलाओं के हुक़ूक़ और महिलाओं की ज़िम्मेदारियाँ दोनों का हक़ीक़ी ज्ञान हुआ है अन्यथा यहां अफ़्रीक़ा में तो अक्सर औरतें जितनी बुरी ज़िंदगी गुज़ार रही हैं इस का तसव्वुर भी तरक़्क़ी याफताह देशों में मुश्किल है। आप लोगों का फ़ेअल आपके कथन से अनुसार है। कहती हैं कि अगर अहमदियों का फ़ेअल उनके क़ौल से अनुसार है तो आप लोगों से बेहतर मैंने कोई नहीं देखा। अत: यह केवल तक़रीर के लिए नहीं है बल्कि हर अहमदी को अपने घरों में इस तालीम के उदाहरण भी दिखाने होंगे ताकि इस्लाम की इस हक़ीक़ी तालीम का लोगों पर जो असर हुआ है वह क़ायम भी रहे।

नाईजेरिया के एक ग़ैर अहमदी दोस्त फ़रीद मूसा ने भी महिलाओं के भाषण की तारीफ़ की है। फिर एक ग़ैर अहमदी महिला मर्यम इलयास साहिबा ने बताया कि औरत के हुक़ूक़ के बारे में जो बातें इमाम जमाअत अहमदिया ने बताई हैं यह इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात जान कर मुझे अपने औरत होने पर फ़ख़र हुआ काश! इस बात को सब लोग समझ लें तो दुनिया ही जन्नत बन जाए।

नाईजेरिया से एक ग़ैर अहमदी महिला नफीसा आदम्मू कहती हैं पहली बार मैंने इमाम जमाअत अहमदिया का भाषण सुना और मुझ पर यह बात रोज़-ए-रौशन की तरह स्पष्ट हो गई कि जो इज़्ज़त-ओ-एहतिराम सय्यदना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरत को दिया है आज अगर दुनिया में उसे कोई पूरा कर रहा है तो वह जमाअत अहमदिया ही है। अत: दुबारा मैं यही कहूँगी कि हर अहमदी मर्द के लिए बड़े सोचने का मुक़ाम है कि अपने रवैय्ये अपने घरों में भी ठीक रखें। दुनिया को धोखा न दें।

अमीर साहिब नाईजेरिया लिखते हैं कि एक ग़ैर अहमदी दोस्त अल्हाज हुसैन पेशा के लिहाज़ से बिज़नस मैन हैं। काफ़ी व्यस्त होते हैं लेकिन जब उन्हें जलसे की दावत दी गई तो उन्होंने दावत क़बूल की। जलसे के बाद मौसूफ़ ने बताया कि मैं रस्मी तौर पर आपके जलसे में आया था कि कोई दुनियावी मेला होगा लेकिन जब मैंने जलसा सुनना शुरू किया तो मैं ने इरादा कर लिया कि तीनों दिन बाक़ायदगी से आऊँगा। सबसे ज़्यादा मुझे जिस बात ने प्रभावित किया वह जलसा का माहौल था। रज़ाकारान को काम करते देखकर लगा कि उनके दिल में एक जज़्बा है जो उन्हें हिम्मत दे रहा है अन्यथा यह दुनियावी आदमी के बस की बात नहीं।

गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि कुण्डिया रीजन के लोकल मिशनरी हैं : इलाक़े के मेयर को दावत दी थी उसने कहा मैं तो बीमार हूँ लेकिन मेरा बेटा आ जाएगा। वह जब आया उस वक़्त मेरा महिलाओं में लजना का भाषण शुरू होने वाला था। बिजली की वहां बड़ी कमी रहती है। बारिशों का आजकल मौसम है और अगर बिजली चली जाए तो फिर घंटों बिजली नहीं आती। कहते हैं जब प्रोग्राम शुरू होने लगा तो बिजली बंद हो गई और मेहमान भी आ गए। जनरेटर भी कोई नहीं था। मिशनरी ने कहा हमने दुआ की कि अल्लाह तआला जमाअत की सच्चाई के लिए आज तो चमत्कार दिखा दे और बिजली बहाल कर दे। कहते हैं हमने दर्द-ए-दिल से दुआ की और अभी भाषण के लिए मैं डाइस पर नहीं आया था कि बिजली आ गई और कहते हैं अल्लाह तआला ने हम आजिज़ ग़ुलामो की दुआ को सुना और मसीह मौऊद और इस्लाम की सच्चाई के लिए निशान दिखाया जिसका हमारे मेहमान के दिल पर बड़ा असर हुआ और हैरत वाली बात यह है कि जैसे ही भाषण ख़त्म हुआ बिजली फिर बंद हो गई। उसने भी यही कहा कि मैंने इतने उत्तम भाषण कभी नहीं सुन और जो कुछ भी जमाअत के बारे में मुस्लमानों ने मशहूर कर रखा है सब ग़लत है।

कैमरोन से वहां के मुअल्लिम कहते हैं कि कैमरोन के शुमाली इलाक़े के मरवा (maroua) के क़रीब एक गांव के चीफ़ इलहाजी उसमान जो ग़ैर अहमदी हैं उन्होंने जलसे की कार्रवाई एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा के माध्यम से देखी तो कहने लगे हम बचपन से सुनते आ रहे थे कि जब इमाम महदी आएँगे तो पूरी दुनिया उस को देख लेगी। आज जलसे की कार्रवाई देखकर यक़ीन आया कि यह जमाअत वाक़ई इमाम महदी की जमाअत है जिसको सारी दुनिया इस वक़्त देख रही है। कई देशों के लोग भी अपने मुल्कों से एम. टी. ए. के माध्यम से जलसे में शामिल थे और इमाम जमाअत अहमदिया को देख और सुन रहे थे। आज मैंने ख़ुदा के नबी की बात पूरी होते देखी।

अमीर साहिब माली जलसे के माध्यम से बैअतों के वर्णन में लिखते हैं कि कीता शहर के एक उस्ताद उमर बारी साहिब ने फ़ोन कर के बताया कि जबकि कि मैं अहमदी नहीं हूँ लेकिन फिर भी न केवल मैंने बल्कि घर के समस्त लोगों ने बड़ी दिलजमई से जलसा की कार्रवाई सुनी और खासतौर पर जब ख़लीफ़ा वक़्त की बातों के दौरान मुख़्तलिफ़ नारे बुलंद होते तो हम घर के समस्त अफ़राद पुरजोश हो जाते थे और हम भी नारे दोहराते थे। उमर बारी साहिब ने कहा कि इन शा अल्लाह वह जल्द अहमदिया मिशन आकर अपनी फ़ैमिली समेत जमाअत अहमदिया में शमूलियत हासिल करेंगे।

मुबल्लिग़ इंचार्ज कैमरोन कहते हैं कैमरोन से चीफ़ डवाला (douala) फ़ारूक़ साहिब ने बताया कि मैंने एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा के माध्यम से जलसे की तक़ारीरेन सुनी। जो लोग जमाअत को काफ़िर कहते हैं और दहश्तगर्द तंज़ीम कहते हैं उनका उत्तर ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाली आयत है जो बड़े शब्दों में स्टेज की दीवार पर लिखी थी। अब इन शा अल्लाह एम. टी. ए. के माध्यम से जमाअत के सम्बन्ध में काफ़ी ग़लत-फ़हमियाँ दूर होंगी।

अमीर साहिब तनज़ानिया लिखते हैं अरूशा रीजन से एक ग़ैर अज़ जमाअत महिला जाबू (jabu) साहिबा ने बताया कि यह पहला अवसर था कि मैंने जलसा सालाना देखा है। इतना पुरसुकून इजतिमा मैंने अपनी ज़िंदगी में नहीं देखा। आम तौर पर जलसों में लोग शोर मचाते और लोगों को बहलाने के लिए तरह तरह के हास्य के प्रोग्राम करते हैं लेकिन इस जलसे में ऐसा कुछ नहीं था बल्कि हर प्रोग्राम में इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम के बारे में बताया जाता था। नि संदेह अहमदियों के अपने ख़लीफ़ा से मुहब्बत की मिसाल दुनिया में नहीं मिल सकती।

फिर कैमरोन के शहर मरवा (maroua) के एक लोकल चीफ़ यह कार्रवाई देखकर कहते हैं यह जमाअत का कमाल है कि इतनी ज़्यादा ज़बानों में जलसा सालाना की कार्रवाई का अनुवाद हो रहा है और लोग इस से इस्तिफ़ादा कर रहे हैं। मैंने जलसे से इस्तिफ़ादा किया और मेरा इलम बढ़ा है। एम. टी. ए. एक बरकत है। मैं अब केबल कनैक्शन लगवाऊंगा और अपने घर में बैठ कर एम. टी. ए. से इस्तिफ़ादा करूँगा और अपना इलम बढ़ाऊँगा। अब ग़ैर भी एम. टी. ए. से प्रभावित हैं और जो दीनी मायदा से फ़ायदा उठाना चाहते हैं वे इस से फ़ायदा उठाते हैं और यही एक तरक़्क़ी का राज़ है। यदि रुहानी लिहाज़ से तरक़्क़ी करनी है तो अहमदियों को भी चाहिए कि एम. टी. ए. की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा दें।

मुबल्लिग़ इंचार्ज गीबोन (gabon) लिखते हैं। एक नौमुबाईन अहमदी ने कहा कि हक़ीक़त में यह सारी दुनिया का जलसा है जिसमें हम भी शामिल हैं और अन्य बेशुमार मुल्कों से भी लोग शामिल हैं। यह चीज़ भी हमारे ईमानों को मज़बूत कर रही है। वक़्त के फ़र्क़ के बावजूद सारी दुनिया में लोग जलसे में बैठे हैं। यह दृश्य केवल अहमदियत ही पेश कर सकते है। दूसरे मुस्लमानों के लिए तो यह संभव नहीं है।

ज़ेमबिया के पूर्वी सूबा के शहर लूसा न्गाज़ी (lusangazi) के नौमुबाईन अली साहिब हैं। अपने इलाक़े के हैड मैंन भी हैं। यह कहते हैं कि हम ईसाइयत से अहमदियत में आए हैं और हमारे गांव में अहमदियत का आरंभ बाक़ायदा फरवरी 2021 ई. में हुआ। इसके बाद अत्यधिक बार ग़ैर अहमदी उल्मा हमारे इलाक़े में आए और हमारे दिलों में अहमदियत के ख़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ किस्म के संदेह डालने की कोशिश करते रहे। जब तक ईसाई थे कोई नहीं पूछने आया। जब अहमदी हो गए तो ग़ैर अहमदी उल्मा उनका दीन ठीक करने के लिए पहुंच गए। कहते हैं: अब हमें जलसा सालाना यू.के. लाईव देखने की तौफ़ीक़ मिली है। हमने अपनी ज़िंदगी में पहली दफ़ा मुनज़्ज़म जलसे का दृश्य देखा है जहां महामारी के हालात के बावजूद भी इतनी बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए और मुख़्तलिफ़ देशों के हुकूमती नुमाइंदगान ने अपने वीडीयो के द्वारा संदेश भिजवाए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जलसा सालाना देखने के बाद हमारे समस्त संदेह दूर हो गए कि अहमदियत एक छोटे से गिरोह का नाम नहीं बल्कि एक आलमगीर जमाअत है। जिस तरह ख़लीफ़ा वक़्त ने महिलाओं और दूसरे लोगों के हुक़ूक़ के बारे में इस्लामी तालीमात वर्णन की हैं उसने हमें हैरान कर दिया है कि महिलाओं के भी हुक़ूक़ हैं अन्यथा हम तो अपनी महिलाओं को कुछ नहीं समझते थे। इन शा अल्लाह जो कुछ हमने यहां देखा और सुना है हम वापस जा के दूसरे अहबाब को भी बताएँगे ता कि उनका भी ईमान मज़बूत हो और अमल की कोशिश करेंगे।

मलेशीया से एक नौमुबाईन रुसली बिन मौपअसोली (rusli Bin map-

pasulle) साहिब कहते हैं कि जलसा सालाना यू.के को देखकर मैं ख़ुदा तआला का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे जमाअत अहमदिया में शामिल होने और समय के इमाम को पहचानने की तौफ़ीक़ हासिल हुई। मैं यू.के में तो नहीं था लेकिन इस के बावजूद मुझे ख़लीफ़ा वक़्त को देखने और उनके भाषण सुनने का अवसर मिल रहा था। अगर मैं जमाअत अहमदिया में शामिल न होता तो मैं इन बरकात से वंचित हो जाता। अब मैं वाअदा करता हूँ कि मैं ख़िलाफ़त के साथ हमेशा वफ़ादार और फ़रमांबरदार रहूँगा।

ब्राज़ील की एक महिला हैं परेसीला मार्लिम (priscila marleme) साहिबा। चंद माह पहले उन्होंने बैअत की थी, कहती हैं कि मेरी ख़ुशक़िसमती है कि मुझे पहली बार जलसा सालाना देखने का अवसर मिला और बावजूद ज़बान न समझने के बहुत कुछ सीखने और जानने का अवसर मिला। मैं ख़ुदा का शुक्र अदा करती हूँ कि उसने मुझे अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं : गिनी बसाऊ जमाअत के एक दूर दराज़ इलाक़े किसीनी की चार नौमुबाईन लजनात आठ किलो मीटर पैदल सफ़र करके अपनी क़रीबी की जमाअत मिसरा में जलसा सालाना यू.के की कार्रवाई सुनने के लिए गईं और जब उन्होंने मेरा भाषण सुना तो कहती हैं अल्लाह के फ़ज़ल से हमने अहमदियत क़बूल कर ली थी परन्तु आज हमें ख़लीफ़ा का भाषण सुनकर एहसास हुआ कि हम कितनी बड़ी नेअमत से दूर थे। आज हमारा ईमान अहमदियत पर सौ फ़ीसद मुकम्मल हुआ है और आज हमने यह अहद किया है कि हम हमेशा ख़लीफ़ा वक़्त का ख़ुतबा सुनने के लिए आया करेंगी। यह किस तरह तबदीलियां अल्लाह तआला पैदा फ़र्मा रहा है।

गयाना से भी लोग लाईव स्ट्रीम के माध्यम जलसे में शामिल हुए। एक नौमुबाईन केवसी (kwesi) साहिब कहते हैं कि मेरा पहला जलसा सालाना था और मेरे लिए तजुर्बा बहुत शानदार था। ख़ासतौर पर जब मैं अपने अहमदी भाईयों के साथ मिलकर जलसा देखने बैठा और ख़लीफ़ा वक़्त को देखा और उनकी तक़रीर सुनी तो यह सब मेरे लिए बहुत ही ज़बरदस्त अनुभव था। मैंने पहले कभी किसी मुस्लमान महिला को इतनी अच्छी तिलावत करते नहीं देखा। तिलावत की भी उन्होंने तारीफ़ की। फिर कहते हैं कि हमारी जमाअत के अहबाब मुख़्तलिफ़ कस्बों और गांव से जलसा सुनने के लिए एक जगह जमा हुए यह सब ख़िलाफ़त और अहमदियत की बरकात हैं जो अल्लाह तआला ने इस जमाअत को अता फ़रमाई हैं। इस तरह दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों की जमाअत को जलसा सालाना में वर्चूयली (virtually) भी शामिल देखना बहुत ज़बरदस्त था। मैंने बहुत से ऐसे देशों देखे जिनके बारे में मुझे इलम नहीं था कि वहां अहमदिया जमाअत पहुंच चुकी है। इसी तरह यह भी देखा कि किस तरह अहबाब जमाअत मिलकर जलसा के लिए काम कर रहे हैं। यू.के में एक साहिब जो बैंक में काम करते हैं वह काम से छुट्टी लेकर जलसा के लिए सेवा पर काम कर रहे हैं और अपनी कार में सो रहे हैं। ये सारी बातें साबित करती हैं कि जमाअत के लोगों में इख़लास है और वे क़ुर्बानी कर रहे हैं। हुक़ूक़ का मुझे तक़रीरों से पता लगा। इस तरह उन्होंने अपने जज़बात का इज़हार किया हुआ है।

मारीशस से एक नौमुबाईन सफ़वान नायक साहिब कहते हैं कि लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से जलसा में शमूलियत का पहला तजुर्बा था। निसंदेह इस तरह की शमूलियत मुझे ख़िलाफ़त के ज़्यादा क़रीब कर रही थी। ख़लीफ़ा वक़्त का हर शब्द मेरे दिल-ए-पर लगता था। जमाअत में शामिल होने के फ़ैसले से मैं बहुत ख़ुश हूँ। एम. टी. ए. के प्रोग्रामों से मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बहुत कुछ सीख रहा हूँ।

ऑस्ट्रिया से अशर्फ़ ज़िया साहिब कहते हैं कि डोनाटेला (donatella) साहिबा ने इस साल के शुरू में बैअत की। वह कहती हैं कि जो भी ख़लीफ़ा वक़्त ने कहा वह जज़बात को गर्मा देने वाला था। उनके ख़िताबात के दौरान मेरे आँसू गिरते रहे। इस्लाम वाक़ई ज़िंदगी बख़श और सच्चाई का रास्ता है। मेरी ज़िंदगी आहिस्ता-आहिस्ता बिल्कुल बदल रही है। मैं अल्लाह तआला की बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी। यह ऑस्ट्रियन हैं।

जलसे में शमूलियत के बाद क़बूल अहमदियत के भी बड़े वाक़ियात हैं। ऐवरी कोस्ट से एक ग़ैर अहमदी दोस्त हसन साहिब ने वर्णन किया कि जलसा के तीनों दिनों का प्रोग्राम देखने का अवसर मिला। इंतिहाई ईमान अफ़रोज़ था। कहने लगे कि झूठ की उम्र लंबी नहीं होती और वह अपनी मौत आप मर जाता है जबकि सच्चाई हमेशा क़ायम रहती है। इसी उसूल के अधीन जमाअत अहमदिया की दिन प्रतिदिन की तरक़्क़ी ख़ुद इस की सदाक़त का सबूत है। कहते हैं जलसा सालाना के समापन के बाद हम कुछ दोस्त एक रैस्टोरैंट में बात चीत कर रहे थे कि एक अजनबी शख़्स हमारी बातें सुनकर कहने लगा अगर आज इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात पर अमल करने वाली कोई जमाअत है तो वह केवल़ जमाअत अहमदिया ही है। इतना कह कर वह अजनबी तो चला गया परन्तु हमारी बातों की तसदीक़ कर गया कि अहमदियत न केवल कथनी बल्कि अमली तौर पर भी हक़ीक़ी इस्लाम पर अमल पैरा है। इसके बाद हसन साहिब हमारे मुअल्लिम से मिले और कहा कि मैं बैअत कर के अहमदियत में दाख़िल होना चाहता हूँ और अब मैं ज़्यादा देर तक अपने आपको इस सच्चाई से वंचित नहीं रख सकता।

कांगो बराज़ा वेल के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं एक गम्बोमा (gamboma) में तीनों दिन टी.वी और रेडीयो पर जलसा के समस्त लाईव प्रोग्राम दिखाने की तौफ़ीक़ मिली। इस इलाक़े में केवल एक ही टी.वी स्टेशन है और इस पर हमारे जलसे के प्रोग्राम चलते रहे। एक अंदाज़े के अनुसार चार हज़ार अफ़राद ने जलसा देखा और सुना होगा। गम्बोमा के इर्द-गिर्द तीस दिहात की जमाअत ने भी रेडीयो के माध्यम जलसा सालाना में शिरकत की। इन इलाक़ों में बिजली की सहूलत उपलब्ध नहीं इसलिए लोग रेडीयो के माध्यम सुनते हैं। फिर उन्होंने लिखा कि जितने मेरे ख़िताबात थे उनका लोकल ज़बान लिंगाला (lingala) में यहां अनुवाद हो रहा था वे भी सुना। कहते हैं अलहमदु लिल्लाह प्रोग्राम बहुत सफ़ल रहा जिसका इज़हार अपनों और ग़ैरों, सबने किया। तीनों दिन हर तरफ़ जलसा सालाना का माहौल था। वैसे ही खाने का इंतिज़ाम किया गया था जैसे जलसे में किया जाता है। जलसे के समय अल्लाह के फ़ज़ल से बारह लोगों को बैअत कर के जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल से अक्सर नौमुबाइन अहमदियत क़बूल करने के बाद अब अपने अपने इलाक़े और अपने अज़ीज़-ओ-अक़ारिब में कसरत से तब्लीग़ कर रहे हैं। जलसा सालाना यू.के के बाबरकत अवसर पर जब अहबाब को जलसे के प्रोग्राम देखने की तहरीक की गई तो समस्त नौमुबाइन ने अपने ग़ैर अज़ जमाअत अज़ीज़-ओ-अक़ारिब और दोस्तों को जलसा में मेरे तीन चार ख़िताबात सुनने के जो वक़्त थे उस पर खासतौर पर बुलाया। कहते हैं लोग तीस किलो मीटर और अठारह किलो मीटर का फ़ासिला साईकलों पर या पैदल करके वहां पहुंचे। अक्सर लोग केवल पहले दिन का भाषण सुनने के लिए आए थे परन्तु उन्होंने जब मेरा पहले दिन का भाषण सुना तो उनका इरादा बदल गया और उन्होंने तीनों दिन क़ियाम करने का इरादा किया और तीसरे दिन इख़ततामी भाषण सुनने के बाद ये लोग कहने लगे कि आपके ख़लीफ़ा ने हमारे दिल जीत लिए हैं और जो इस्लाम उन्होंने पेश किया है वही हक़ीक़ी इस्लाम है। इस पर 127 अफ़राद, मर्द और महिलाओं, ने अहमदियत क़बूल की। तो इस तरह इजतिमाई तौर पर भी बैअतें हुईं।

कोंगो से मुअल्लिम सिलसिला इब्राहीम साहिब कहते हैं कि एक ईसाई दोस्त मूक नगा चीबी (mouk ngantsibi) साहिब को जलसा देखने के लिए बुलाया गया। वह अपनी बीवी के साथ जलसे में शरीक हुए। जलसा देखने के बाद उसने अपनी बीवी से कहा कि मुझे तो लगता है कि इस तरह की तालीमात और मार्गदर्शन हमें कहीं नहीं मिलेगी। हमने अपनी ज़िंदगी का एक लंबा हिस्सा ईसाइयत में ज़ाए कर लिया है। यहां पर हमने जो तीन दिनों में सीखा है वह ईसाइयत में रह कर पूरी ज़िंदगी भी नहीं सीख सकते। हमारी भलाई अब इसी में है कि हम उनके साथ शामिल हो जाएं। इस तरह मियां बीवी और बच्चों ने बैअत करके जमाअत में शमूलियत इख़तियार कर ली।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि गिनी बसाऊ के बाफ्टा रीजन से सम्बन्ध रखने वाले ग़ैर अहमदी दोस्त कुम्बा जाओ साहिब ने जलसा सालाना यू.के के तीन दिनों की कार्रवाई सुनी और मेरे ख़िताबात सुने और फिर कहने लगे इस्लाम को इस वक़्त एक लीडर की ज़रूरत है और वह जमाअत अहमदिया के पास है ख़लीफ़ा की सूरत में और इसी पर समस्त आलम-ए-इस्लाम इकट्ठा हो सकता है। इस तरह जलसा ख़त्म होते ही उन्होंने उसी वक़्त बैअत करके अहमदियत में शमूलियत इख़तियार कर ली।

कांगो बराज़ा वेल से एक ईसाई दोस्त अंगो तान्नी साहिब हैं : मैंने कभी भी किसी मज़हब में दिलचस्पी नहीं ली क्योंकि ईसाइयत को देखकर यही लगता था कि धार्मिक लोग मुख़लिस नहीं होते। मेरा भाई पहले ही जमाअत में दाख़िल हो चुका था उसने मुझे इस जलसे में शामिल होने की दावत दी। मैं उस के कहने पर आ गया

और जूँ-जूँ में जलसा देखता गया मेरे अंदर तबदीली पैदा होना शुरू हो गई और मज़हब के साथ लगाओ पैदा होने लगा। ख़लीफ़ा की तक़ारीर सुनकर पहली दफ़ा मेरे दल ने गवाही दी कि मज़हब एक हक़ीक़त है। सच्चे मज़हब में दिलों को फेरने की ताक़त है। मैं ज़िंदगी में पहली दफ़ा इस्लाम अहमदियत को बतौर मज़हब क़बूल कर रहा हूँ।

नाईजीरिया के एक ग़ैर अहमदी दोस्त को जलसा सुन के बैअत की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं: मैं जलसा के प्रोग्राम देखकर बहुत प्रभावित हुआ और जिस हक़ का मैं मुतलाशी था वह मिल गया। अब मैं बैअत करना चाहता हूँ।

सेनेगाल से ज़फ़र इक़बाल साहिब कहते हैं कि अम्बूर रीजन में जलसा के तीनों दिनों में जो मेरे ख़िताबात थे चार रेडीयो और एक टी.वी पर लाईव प्रसारित हो रहे थे। एक रेडीयो मेज़बान ने इन ख़िताबात को सुनकर अहमदियत क़बूल की। वह मेज़बान निहायत पढ़े लिखे और अवाम में बहुत मक़बूल हैं। उन्होंने कहा मैंने जमाअत के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना था लेकिन आज इमाम जमाअत की बातें सुनकर मुझे हक़ीक़त पता चली है। इस लिए मैं सिलसिला अहमदिया में दाख़िल होता हूँ। उसी दिन उन्होंने अपनी फ़ैमिली समेत बैअत कर ली।

कैमरोन के मरवा शहर के एक लोकल इमाम हैं। वह कहते हैं कि जलसे की विशेष बात जमाअत के इमाम की तक़ारीर हैं। जमाअत के ख़लीफ़ा हर बात क़ुरआन और हदीस से करते हैं और उसने मेरे दिल पर बहुत असर किया है। निसंदेह यह जमाअत और ख़लीफ़ा ख़ुदा की तरफ़ से हैं। मेरा दिल संतुष्ट है। इस लिए उन्होंने अपने दोस्तों समेत बैअत करके जमाअत में शमूलियत इख़तियार कर ली। इन्साफ़ की नज़र से देखने वाले अल्लाह के फ़ज़ल से उल्मा में ऐसे भी हैं जो हक़ देखते हैं और क़बूल करते हैं।

माली में ग़ैर अज़ जमाअत अहबाब ने जलसा देखने के बाद जमाअत में शमूलियत की। जलसा से क़बल जमाअती रेडीयो पर जलसा के बारे में प्रोग्राम किए गए और जलसा के बारे में रोज़ाना रेडीयो पर ऐलान भी प्रसारित होता रहा। कहते हैं हमने हर एक को जलसा देखने के लिए मिशन आने की दावत दी। इस लिए जलसा के दिनों में अहमदी अहबाब के अतिरिक्त ग़ैर अज़ जमाअत अफ़राद भी जलसे की प्रसारितियात देखने आए। जलसे के आख़िरी रोज़ चार अफ़राद बैअत कर के अहमदियत में दाख़िल हुए। ये अफ़राद पढ़े लिखे हैं और उन्होंने वर्णन किया कि हम काफ़ी अरसा से काई शहर में रेडीयो सुन रहे थे और हमें अहमदियत में दिलचस्पी थी। जब हमने रेडीयो पर जलसा के बारे में सुना तो हमें तजस्सुस हुआ कि उनके जलसा को ज़रूर देखना चाहिए। जलसा देखने के बाद ये कहते हैं कि इस्लाम की सफ़लता और तरक़्क़ी केवल् अहमदियत के साथ जुड़ी है। जिस इस्लाम को अहमदियत दुनिया के सामने पेश कर रही है वही असल और हक़ीक़ी इस्लाम है और सबसे बड़ी बात यह है कि मुस्लमानों को एक ख़लीफ़ा की ज़रूरत है जो उनका मार्गदर्शन कर सके और मौजूदा ज़माने में इस्लाम में ख़िलाफ़त अहमदियत के माध्यम से जारी हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि अब हम पक्के अहमदी हैं और जो माहाना चंदा एक अहमदी के लिए देना ज़रूरी है हमें बताएं, हम हर माह दीन की ख़िदमत के लिए चंदा भी देंगे।

अमीर साहिब माली लिखते हैं काई रीजन के मिशन हाऊस में जलसे की प्रसारितियात देखने के लिए ग़ैराज़ जमाअत अफ़राद आए। जलसे के तीसरे दिन जब बैअत के ईमान अफ़रोज़ नज़ारों पर मुश्तमिल एक डाकूमैंटरी पुरानी बैअतों की दिखाई गई तो ग़ैर अज़ जमाअत ने जो पढ़े लिखे थे उन्होंने प्रश्न किया कि बैअत की शरायत क्या हैं? अन्तराल के दौरान सब उपस्थित गणों को मुअल्लिम साहिब ने शरायत बैअत स्थानीय भाषा में अनुवाद कर के सुनाएँ। इस ग़ैर अज़ जमाअत ने कहा कि यह तो इस्लाम का ख़ुलासा है और इस में समाजी ज़िंदगी गुज़ारने के बारे में अहसन रंग में मार्गदर्शन है। उन्होंने कहा कि इस पर अमल करना तो हर एक के लिए बहुत अहम और ज़रूरी है। इस लिए जलसे के बाद उन्होंने बैअत कर ली।

घाना से लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम लोग जलसे में शामिल हुए। बुसतान-ए-अहमद इक़रा के सरसब्ज़ अहाता में जलसा का इंतिज़ाम किया गया था। कहते हैं माहौल बहुत अच्छा था। बड़ा भावुक था। दो स्थानों पर दो बड़ी बड़ी वीडीयो स्क्रीन पर अहबाब और महिलाओं ने सीधे जलसा के दृश्य देख रहे थे। तीनों दिनों में पच्चीस सौ से अधिक अहबाब और लजना जलसे में शामिल हुए। अहमदिया सेंट्रल मस्जिद कमासी में बड़े पैमाने पर इंतिज़ाम किया गया था। वहां तीनों दिन दो हज़ार से अधिक लोग शामिल हुए। औपर वेस्ट वा (wa) शहर में बारह मसाजिद में जलसा सालाना की कार्रवाई सुनने का इजतिमाई इंतिज़ाम किया गया था। और बाक़ी सारे रीजन में चौदह स्थानों पर था। इस तरह यहां भी दो हज़ार से अधिक लोगों ने इजतिमाई तौर पर सुना और फिर इसी तरह बाक़ी सारे रीजनज़ में भी इंतिज़ाम किया गया था। और दूसरे चैनल के माध्यम से भी एम. टी. ए. देखते रहे। एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा और एम. टी. ए. घाना के अतिरिक्त जलसा की कार्रवाई घाना के तीन अन्य टीवी चैनल्ज़ पर भी देखी जा सकती थी।

यमन से अकरम अली कहलानी साहिब कहते हैं कि आज ख़लीफ़ा वक़्त ने इस जलसा और ख़िताबात से हमारे दिलों और रूह को नई ज़िंदगी अता कर दी है। हमारी आँखों से आँसू ख़ुशक हो गए थे जो अब वापस लौट आए हैं और दिल सख़्त होने के बाद नरम पड़ गए हैं। अगर ख़लीफ़ा वक़्त का लजना वाला भाषण सारा मुआशरा सुने और इस पर बाक़ायदगी से अमल करे तो सारा मुआशरा सौ फ़ीसद सुलझ जाए। इसी तरह आख़िरी भाषण ने जलसे के सारे इंतिज़ामात को चार चांद लगा दिए। इस सारे निज़ाम की दुनिया में नज़ीर नहीं मिलती। समस्त चेहरे हंसते मुस्कुराते नज़र आए। यह इस ख़ुदा का फ़ज़ल है जिसने यह जमाअत बनाई।

यमन से आमिर अली साहिब कहते हैं कि जलसे के तीनों दिन हमारे लिए ईद थे जिनमें हमने ख़ुदा तआला के फ़ज़लों को नाज़िल होते और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ उसके वादों को पूरा होते देखा। जलसे से ख़िलाफ़त अहमदिया पर हमारे ईमान में दिन-ब-दिन इज़ाफ़ा होता रहा क्योंकि हमने देखा कि किस तरह अल्लाह तआला की ताईद ख़िलाफ़त अहमदिया के शामिल-ए-हाल है। ख़िलाफ़त के अतिरिक्त सिवाए ज़ुल्मत के कुछ भी नहीं। जबकि हम जलसा में जिस्मानी तौर पर शामिल न थे लेकिन हमारे दिल आपके साथ थे और हम जलसे की पाकीज़ा रुहानी फ़िज़ा को यूं महसूस कर रहे थे जैसे हम वहां मौजूद हूँ। कहते हैं आपको देखकर और आपकी नसाएह को सुनकर जज़बात वे थे जो नाक़ाबिल वर्णन हैं। बड़ा गहिरा दिल-ए-पर असर हो रहा था। ख़िताबात से बहुत इस्तिफ़ादा किया क्योंकि मुझे अपनी बहुत सी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा पैदा हुई तथा बहुत सी ग़लतियों का मुझे पता लगा जिनसे में अनजान था। अब कहते हैं कि मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अहमदियों के इकट्ठे हो कर जलसे में शामिल होने के दृश्य ने मेरे दिल में बहुत दर्द पैदा किया और मैंने दुआ भी की कि अल्लाह तआला जलद यमन में भी हमें ऐसी जगह अता फ़रमाए जहां हम इकट्ठे हो कर जलसे में शामिल हो सकें।

अरदन से हामिद साहिब कहते हैं कि हर साल दुनिया के समस्त देशों से लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई की सदाक़त के गवाह बन कर जलसा में शिरकत करते हैं। इस वर्ष का जलसा एक ख़ुसूसीयत का हामिल था क्योंकि इस वर्ष इंटरनैट और एम. टी. ए. के माध्यम से समस्त दुनिया से अहमदियों ने कसरत के साथ इस में शिरकत की। अल्लाह तआला हर किस्म के हालात में जमाअत की सहायता फ़रमाता है क्योंकि यह एक सच्ची जमाअत है। मैं इस साल के जलसे में ख़लीफ़ा वक़्त की मौजूदगी को एक रुहानी कशफ़ या दुनिया में जन्नत से समानता देता हूँ जिसके फल हमने इन तीन दिनों में खाए हैं। यूं महसूस होता था जैसे सच्चे इस्लाम की तब्लीग़ के लिए रुहानी फ़िज़ाओं में नसब किया गया एक आसमानी ख़ेमा है।

शाम से मुहम्मद बदर साहिब कहते हैं कि जलसे में अहमदी मुस्लमान रंग और नसल और कल्चर के इख़तिलाफ़ के बावजूद ख़लीफ़ा वक़्त की क़ियादत में जमाअत के झंडे तले मुत्तहिद थे। फिर कहते हैं कि ख़ुदा तआला का यह कथन उन पर सादिक़ आता है कि अगर तू ज़मीन भर के खज़ाने भी ख़र्च करता तो उनके दलों को न जोड़ सकता बल्कि यह अल्लाह ही है जिसने उनके दलों को आपस बांध दिया है। क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत है। तो हम पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है। फिर कहते हैं कि जलसे में शामिल होने वालों के चेहरों से मुहब्बत के जज़बात टपकते थे। कहते हैं कि जलसे में शांति और सलामती का भी शदीद एहसास हुआ। ऐसा लगता था कि हम सब अहमदी अपने रुहानी क़ायद की लगाम में रेगिस्तान के मध्य वाक़्य एक रुहानी नख़लिस्तान (मरूस्थल के बीच हरे भरे दरख्तों वाला मैदान) में हैं जिसमें शांति ही शांति है और सलामती ही सलामती है। बड़े ज़ोर से एहसास हुआ कि अभी मुझ में बहुत सी कमज़ोरियाँ हैं और मुझे अपने अंदर नेक तबदीलियां पैदा करने के लिए बहुत कोशिश करनी होगी। तक़्वा के आला मयार हासिल करने होंगे। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करना होगा। परिवारिक ज़िंदगी को बेहतर बनाने के लिए महिलाओं से मुहब्बत और नरमी से पेश आना होगा।

जर्मनी से अब्दुर्रह्म्मान साहिब लुबनानी हैं, यह कहते हैं मैंने बर्लिन की मस्जिद में अहबाब जमाअत के साथ तीनों दिनों के जलसा की कार्रवाई सुनी। जलसा की रुहानी फ़िज़ाओं को महसूस किया। जलसे से हमने बहुत इस्तिफ़ादा किया। वह

रूहानियत जिसकी कमी महसूस कर रहे थे वापस लौट आए।

फ़लस्तीन वैस्ट बैंक से उमर साहिब कहते हैं मेरी ख़ाहिश है कि यह जलसा प्रतिदिन आयोजित हो हम अनब और औलिया की तरह बनें। एक मुनफ़रद एहसास था। सब भाईयों ने इकट्ठे बैठ कर जलसा सुना। एक मुहब्बत और प्रेम का माहौल था।

रिज़वान शाहिद साहिब ऐवरी कोस्ट से लिखते हैं "माँ'' शहर की जमाअत के सदर आंद्रे साहिब ने बताया कि जलसे में सबसे प्रभावित करने वाला दृश्य यह था कि दुनियाए अहमदियत ख़िलाफ़त के झंडे तले मुत्तहिद है और ख़िलाफ़त की इताअत में मगन है। किसी जगह दिन है तो किसी जगह आधी रात है। सब ख़लीफ़ा वक़्त का भाषण सुनने के लिए एक साथ एकत्र हैं और अपने ईमानों की ताज़गी के सामान कर रहे हैं।

किर्गीज़स्तान के नैशनल प्रैज़ीडैंट इलयास कूबातौफ़ (ilyas kubatov) कहते हैं कि जलसे पर ऐसी तक़ारीर पेश की गईं जिनको सुनकर मैं जज़बात पर क़ाबू नहीं रख सका और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैंने जलसा सालाना यूट्यूब पर देखा था और इस वक़्त मेरी ख़ुशी की इंतिहा नहीं रही जब मैंने यूट्यूब पर अपने बहन भाईयों के कमनटस देखे जो एक दूसरे को जलसा की मुबारक के पेश कर रहे थे और एक दूसरे को सलामती के संदेश दे रहे थे। यह सब मेरे बहन भाई मुख़्तलिफ़ क़ौमों से सम्बन्ध रखते हैं उदाहरणता रशियन, यूक्रेनी, आर्मीनी, तातारी, क़ज़ाक़ी और करग़ज़ी इत्यादि। ये दृश्य बहुत ही रूह-परवर थे।

नाईजेरिया के अहमदी दोस्त सुलेमान साहिब कहते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त का सीधे ख़ुतबा अपनी माँ बोली भाषा हाओसा में सुनना मेरे लिए एक सम्मान की बात है। कहते हैं एम. टी. ए. 5 पर हाओसा ज़बान के ऐडीशन ने हमारे जलसे को चार चांद लगा दिए और हमारे लिए जलसा और ईद एक साथ हो गए हैं। उन्होंने कहा कि ख़लीफ़ा वक़्त को हाओसा ज़बान में सुनना एक लग्ज़री है जिसकी लज़्ज़त एक हाओसा ही समझ सकता है। इस दफ़ा पहली दफ़ा हाओसा ज़बान में सीधे अनुवाद किया गया था।

इंडोनेशिया की एक जमाअत के एक सवेतोनो (suwitono) साहिब कहते हैं कि जलसा देखने और ख़लीफ़ा वक़्त के ख़िताबात सुनने के बाद हमारे ख़ानदान में ख़िलाफ़त से मुहब्बत की एक नई रूह पैदा हुई है। हमने इन्सानी भाई चारे का आला उदाहरण देखा जो कि दुनिया में किसी जगह नहीं मिलता। ख़िलाफ़त वाक़ई नसल और रंग से बाला हो कर इन्सान के दरमयान मुहब्बत और अमन का मुजस्समा साबित हो रही है।

आस्ट्रेलिया से आतिफ़ ज़ाहिद साहिब कहते हैं कि इफ़्तिताही भाषण लाईव रात 12 बज कर 55 मिनट पर प्रसारित शुरू हुआ। इस के बावजूद लोगों ने इजतिमाई तौर पर वहां पहुंच के बड़ी संजीदगी से जलसे की कार्रवाई सुनी और एक साहिब अपने छोटे बेटे को ले के आए थे। रात को साढ़े दस बजे ख़ुतबा ख़त्म हुआ था। उन्होंने ख़ुतबे के बाद बेटे से कहा कि तुम घर चले जाओ। उसने कहा कि नहीं में तो यहीं बैठ के भाषण सुनूँगा और वह भी रात को बैठा रहा। कहते हैं कि जलसे का इख़ततामी भाषण इतवार की रात देर से शुरू होना था और अगला दिन वर्किंग डे था इसलिए परेशानी थी कि लोग मस्जिद में नहीं आएँ गे लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहबाब जमाअत कसीर संख्या में इख़ततामी भाषण को भी सुनने के लिए आए और बल्कि यह संख्या इबतिदाई सैशन में शामिल होने वालों से ज़्यादा थी।

ब्राज़ील से इब्राहीम साहिब कहते हैं। उनका सम्बन्ध गिनीबसाऊ से है और तालीम के उद्देश्य से ब्राज़ील गए हुए हैं। एक बात जो खासतौर पर मेरे लिए तवज्जा का बायस बनी जिसका में खासतौर पर वर्णन करना चाहता हूँ वह निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है जिसके अधीन एक ही वक़्त में मुख़्तलिफ़ देशों के लोग किस तरह एक दूसरे के साथ मिलकर इकट्ठे जलसे की तक़ारीर और कार्रवाई सुन और देख रहे थे। यह इस बात का सबूत है कि जमाअत अहमदिया ही इस्लाम की हक़ीक़ी नुमाइंदा जमाअत है और अगर इमाम महदी न आए होते तो हम में यह इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद नहीं होता। मैं इस बात का शुक्र अदा करता हूँ कि इस जलसे के माध्यम से मेरे इलम में बहुत इज़ाफ़ा हुआ और इस जमाअत का मैंबर होने पर ख़ुदा का शुक्रगुज़ार हूँ।

किर्गीज़स्तान से اَتَاخَانَوو وَادِلْيَارَا (atakhanova dilyara) साहिबा हैं। यह कहती हैं कि मुक़र्ररीन की तक़ारीर को इख़लास से सुनना और देखना कितना दिलचस्प है। ख़लीफ़ा वक़्त के ख़िताबात को सुनते हुए बंदा ऐसी दुनिया में डूब जाता है जिसमें इस्लाम की निशात सानिया हो रही हो। हम सब एक फ़ैमिली की सूरत में ख़लीफ़ा वक़्त के ख़िताबात मिलकर सुन रहे हैं। खासतौर पर ख़लीफ़ा वक़्त का लजना का भाषण था जिसमें इस्लाम में महिलाओं के हुक़ूक़ वर्णन फ़रमाए। भाषण सुनकर हमें मज़ीद अल्लाह के हुज़ूर झुकना चाहिए कि किस तरह अल्लाह तआला ने हम महिलाओं की हिफ़ाज़त फ़रमाई है। कहती हैं ख़िताबात जज़बात से लबरेज़ कर देते हैं।

गोइटे माला से बाइरन साहिब कहते हैं कि मेरे लिए जलसे का दिन एक विशेष दिन है और किसी चमत्कार से कम नहीं क्योंकि जलसे से कुछ समय पूर्व गोइटे माला जमाअत के अत्यधिक लोग कौरोना वायरस की वजह से बीमार हुए और कुछ की हालत तशवीशनाक हद तक चली गई लेकिन आज गोइटे माला के सब अहबाब यहां बैठ कर इकट्ठे जलसा सुन रहे हैं और कोई मैंबर भी बीमार नहीं है। जब मैं ईसाई था तो चमत्कारों की विचित्र ही धारणा थी। जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर मुझे चमत्कारों की हक़ीक़त समझ आई कि असल चमत्कार इन्सान के अंदर एक पाक तबदीली पैदा करना है। एक वर्ष पूर्व मैं अकेला मस्जिद में आता था। मेरी फ़ैमिली का मस्जिद आना और इस्लाम क़बूल करना सम्भव लगता था। आज मैं अपने साथ अपनी पत्नी, बच्चों, माता पिता और एक भाई बरादर-ए-निसबती (साला, बीबी का भाई।) और उस की फ़ैमिली को भी साथ लाया हूँ और बैठा यह जलसा देख रहा हूँ और इस को निसंदेह एक चमत्कार समझता हूँ। यह साहिब बड़े मुख़लिस सादा से अहमदी हैं और मामूली आमद है लेकिन तब्लीग़ का एक बड़ी भावना उनमें पाई जाता है। जहां भी जाते हैं तब्लीग़ करते हैं और मुख़्तलिफ़ अहबाब को अपने ख़र्च पर मस्जिद की विज़िट करवाते हैं।

गोइटे माला से ही रामीरो तीनीज़ (ramiro martinez) कहते हैं मेरे लिए आज का दिन बहुत विशेष था। एम. टी. ए. के माध्यम यू.के का जलसा और दूसरी जगह के वीडीयो मुनाज़िर देख कर यक़ीन हो गया कि यह आलमगीर निज़ाम निसंदेह ख़ुदाई निज़ाम है। ख़लीफ़ा वक़्त यक़ीनन ख़ुदा की तरफ़ से निर्धारित हैं जो हमें बताते हैं कि मुस्लमानों को किस तरह की शक्ल मुआशरे में पेश करनी चाहिए। मैं बहुत ख़ुश हूँ। आइन्दा से ख़लीफ़ा वक़्त के भाषण हमेशा सुनूँगा। यह साहिब पैंतीस साल तक बाइबल पढ़ाते रहे। मुख़्तलिफ़ ईसाई फ़िर्क़ों के मैंबर रहे परन्तु हमेशा इख़तिलाफ़ की वजह से एक से दूसरा फ़िर्क़ा तबदील करते रहे। ख़ुद तहक़ीक़ कर के इस्लाम अहमदियत क़बूल की है। मस्जिद से बीस किलो मीटर दूर उन की रिहायश है। जब से उन्होंने अहमदियत क़बूल की है इस अरसा में केवल एक जुम्मे गाड़ी ख़राब होने की वजह से नहीं पहुंचे बाक़ी बाक़ायदा जुम्मे पर आते हैं। और अपने घर में पाँच वक़्त नमाज़ों का एहतिमाम किया हुआ हो है।

गोइटे माला से गोंज़ालेज़ (evalin gonzalez) कहती हैं कि जलसा यू. के में सीधे शामिल हो कर मालूम हुआ कि जमाअत अहमदिया का एक निज़ाम है। सब एक लड़ी में पिरोए हुए नज़र आए और ख़ुदा तआला का शुक्र है कि उसने हमें इस निज़ाम का हिस्सा बनने का अवसर दिया। मुझे अफ़सोस है कि ख़लीफ़ा वक़्त की बातों को सुनने से एक बड़ा हिस्सा दुनिया का वंचित है। इसी वजह से दुनिया में मसायल हैं। जंग की कैफ़ीयत है। मुझे अहमदियत में दाख़िल हो कर यह बात समझ आई कि दुआ से सब कुछ हो सकता है और हमारे बहुत से मसायल दुआ से हल हो गए। मेरा उजड़ता हुआ घर ख़लीफ़ा वक़्त की दुआ से बचा। मेरे पास इस वक़्त शब्दों नहीं कि ख़लीफ़ा वक़्त का धन्यवाद कर सकों। कहती हैं पहली मर्तबा शामिल होने की वजह से मैं कह सकती हूँ कि मेरे लिए सफ़लताओं और फ़तह का वर्ष है। हम मुकम्मल तो नहीं हैं परन्तु हमारा रूहानियत का एक नया सफ़र शुरू हो गया है। मैं आइन्दा भी हर साल जलसे में शामिल हुआ करूँगी।

नाईजेरिया के अहमदी दोस्त अयसिया बाबा हैं : मैंने ख़ुतबा में मेहमान-नवाज़ी के बारे में सुना कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम किस तरह अपने आराम पर मेहमानों के आराम को फ़ौक़ियत देते थे और ख़लीफ़ा वक़्त ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मिसाल पेश की कि मेहमानों के आराम के लिए अपनी चारपाई भी दे दी। सारी रात मुश्किल में गुज़ारी और फिर इस की मिसाल मैंने जलसे में देखी कि किस तरह भाई चारे की फ़िज़ा क़ायम थी। कीचड़ में फंसी हुई गाड़ियों को ख़ुद्दाम अपने आप की पर्वा किए बग़ैर बाहर निकाल रहे थे। शायद यही भाई चारा है जिस की कमी की वजह से आज मुस्लमान दुनिया में ज़लील-ओ-ख़वार हैं और यह हल हमें ख़लीफ़तुल मसीह ने बता दिया।

समद ग़ौरी साहिब अल्बानिया से लिखते हैं एक दोस्त डाक्टर बयार (bujar) साहिब ने बताया कि मैंने ख़लीफ़ा वक़्त के ख़िताबात के अतिरिक्त जलसा सालाना यू.के के अन्य प्रोग्राम भी देखे हैं। आजकल के इस दौर में जलसा सालाना लोगों की हिदायत के लिए एक अहम ज़रूरत है। कहते हैं ख़लीफ़ा वक़्त के ख़िताबात निहायत सादा शब्दों में लेकिन मौजूदा वक़्त के बारे में एक अज़ीम संदेश लिए हुए थे। ऐसे

वक़्त में जबकि समस्त अख़लाक़ी क़वानीन को पामाल किया जा चुका है और दुनिया को कहते हैं कि ये लोग इन्सानियत को हुक़ूक़ दिलाएंगे और दुनिया को बचाएँगे जबकि ये लोग भूल जाते हैं कि ये उसूल तो दरअसल पंद्रह सौ वर्ष पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम फ़रमाए थे जिनके अलमबरदार आज जमाअत अहमदिया है। इस दफ़ा जलसा सालाना में जो दृश्य देखे उनमें जमाअत अहमदिया और ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के अफ्रीक़ा के ग़रीब इलाक़ों में ख़िदमात के दृश्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इन बच्चों की दमकती हुई आँखें हक़ीक़त पर से इस रंग में पर्दा उठाने वाली थीं कि उनके आगे दुनिया के बड़े बड़े लीडरों की लफ्फ़ाज़ियाँ और प्रोपेगंडे तुच्छ हैं, वे आँखें ज़िंदगी मांगने वाली हैं और पानी ज़िंदगी है जिसको वे पहली बार कितने मज़े से चख रहे थे।

जलसा सालाना के अवसर पर जो ख़ैर सगाली के संदेश प्राप्त हुए। वे यू.के के अतिरिक्त नौ देशों से अहम शख़्सियात के ख़ैर के 109 संदेश प्राप्त हुए। उनमें वीडीयो संदेश, आडियों संदेश, तहरीरी संदेश शामिल हैं। यू.के के अतिरिक्त जिन देशों से संदेश आए उनमें यू.एस.ए, सीरालियौं, गेम्बया, सेनेगाल, कीनीया, स्पेन, हॉलैंड, जर्मनी शामिल हैं। प्राइम मिनिस्टर यू.के, प्राइम मिनिस्टर कैनेडा, यू.के के लेबर पार्टी लीडर Lib dems के यू.के के लीडर इस तरह और बहुत सारे politicians हैं। फिर आठ मिनिस्टर्ज़, ग्यारह शैडो मिनिस्टर्ज़, चार पूर्व सेक्रटरयान स्टेट, लंदन पुलिस कमिशनर, छः नैशनल धार्मिक लीडर्ज़ और तेराह मेयरज़ के संदेश मिले। इस के अतिरिक्त भी मुख़्तलिफ़ वर्गों से सम्बन्ध रखने वाली मुख़्तलिफ़ शख़्सियात के संदेश मिले।

एम. टी. ए. अफ्रीक़ा की रिपोर्ट यह है कि पिछले सालों की तरह इस साल एम. टी. ए. अफ्रीक़ा के माध्यम भी अफ्रीक़ा भर में जलसा सालाना यू.के की प्रसारितियात देखी और सुनी गईं जिसको हमने लोगों के तास्सुरात से भी देख लिया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एम. टी. ए. अफ्रीक़ा के अतिरिक्त जलसा सालाना की प्रसारितियात बाअज़ अन्य मुक़ामी टीवी चैनल्ज़ पर भी प्रसारित की गईं। इस साल गेम्बया, सैरा लैवन, लाइबेरिया, घाना, योगंडा, माली, रवांडा, बरोंडी, सेनेगाल, बुर्कीना फासो में चौदह मुख़्तलिफ़ टीवी स्टेशनज़ पर मेरे जो ख़िताबात थे सीधे प्रसारित किए गए। एक अंदाज़े के अनुसार पचपन मिलियन से अधिक लोगों तक इस्लाम का संदेश पहुंचा। कौरोना की वजह से अफ्रीक़ा के जो बैरूनी मेहमान शिरकत नहीं कर सके थे उनके मुतालिबात आ रहे थे कि हमें भी शामिल होने का अवसर दिया जाए।

हाओसा ज़बान में पहली दफ़ा अनुवाद हुआ। यह ज़बान अफ्रीक़ा में पच्चास मिलियन से अधिक लोग बोलते हैं। अफ्रीक़ा के सोला मुख़्तलिफ़ टीवी चैनल्ज़ ने जलसा सालाना यू.के के हवाला से ख़बरें प्रसारित कीं। इन चैनल्ज़ को देखने वालों की संख्या साठ मिलियन से अधिक है। योगंडा से मिशनरी ज़की साहिब लिखते हैं कि जलसे से पहले मुख़ालिफ़ीन ने मुख़्तलिफ़ सोशल मीडीया पर जमाअत के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा शुरू कर दिए थे उन्होंने कहा कि उनका अपना क़ुरआन है इत्यादि इत्यादि इसलिए जलसा न सुनें। जब उन्होंने भी इश्तिहार दिया कि जलसा सुनें तो उन्हों ने प्रोपेगंडा शुरू कर दिया कि जलसा न सुनें क्योंकि उनका क़ुरआन भी और है। इस प्रोपेगंडा के नतीजा में योगंडा में एक बड़ी संख्या में लोगों की तवज्जा जलसा सालाना की तरफ़ पैदा हुई। उल्टा असर हो गया और बहुत से ग़ैर अहमदी अहबाब ने इस बात का इज़हार किया कि जमाअत के ख़िलाफ़ इस प्रापेगंडा की वजह से हमें जलसा के हवाले से तजस्सुस हुआ और जलसा देखने के बाद हमारे दिल बदल गए हैं और हमें पता लग गया है कि अहमदियों का वही क़ुरआन है बल्कि वह दूसरों की निसबत क़ुरआन-ए-करीम से ज़्यादा इशक़ करते हैं।

योगंडा के एक कैथोलिक दोस्त ने लिखा कि मैंने योगंडा के नैशनल टी.वी पर जलसे का इश्तिहार देखा कि यू.के में कोई इस्लामी कान्फ्रैंस आयोजित हो रही है। इस पर मैंने कहा कि देखूं कैसी कान्फ्रैंस है। इस लिए हफ़्ता के रोज़ मैंने टी.वी लगाया तो सफ़ैद पगड़ी वाले एक शख़्स को देखा जो भाषण कर रहे थे। मैंने भाषण सुनना शुरू किया तो टी.वी के सामने से उठ नहीं पाया और शुरू से लेकर आख़िर तक मुकम्मल भाषण सुना। कहने लगे कि महिलाओं के सम्बन्ध में इस्लामी तालीमात कहीं नहीं मिलतीं और मैंने किसी शख़्स को महिलाओं के हुक़ूक़ के बारे में इस तरह आवाज़ उठाते कभी नहीं देखा। उन्होंने उसी वक़्त स्क्रीन पर दिए गए नंबर पर सम्पर्क किया और कहा कि जो महिलाओं का भाषण था मुझे इस भाषण की स्क्रिप्ट (script) चाहिए। इस लिए उन्हें वे इन शा अल्लाह भिजवा दिया जाएगा।

ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त अबदुल्लाह कोई (quye) साहिब लाइबेरिया से हैं। कहते हैं कि मेरा मक़सद जलसा के प्रोग्राम देखने का यह था कि मुझे अहमदी मुस्लमानों और अन्य मुस्लमानों में फ़र्क़ पता चले और मेरे पर वाज़िह हो कि जमाअत अहमदिया के बारे में जो ग़ैर अहमदी उल्मा बताते हैं इसकी क्या हक़ीक़त है। जलसे के देखने के बाद मुझे पूरा यक़ीन हो गया कि जमाअत के ख़िलाफ़ सब मनफ़ी प्रोपेगंडा है। सब झूठ है। हक़ीक़त में जमाअत अहमदिया के माध्यम से इस्लाम का संदेश दुनिया में पहुंच रहा है और मैं अपनी ज़िम्मेदारी समझता हूँ कि बाक़ी लोगों को भी इस हक़ीक़त से अवगत करूँ कि केवल जमाअत अहमदिया हक़ीक़ी तौर पर दीन इस्लाम की इशाअत कर रही है।

लाइबेरिया से ग़ैर अहमदी दोस्त हैं। वे भी यही कहते हैं कि धार्मिक रवादारी के आधार पर जलसे की कार्रवाई देखने के लिए शामिल हुआ था। जब मैंने स्टेज के पर्दे पर लिखी क़ुरआन की आयत पढ़ी तो यह बात मेरे लिए बेहद हैरानकुन थी कि अहमदियों के बारे में ग़ैर अहमदी उल्मा यह मशहूर करते हैं कि अहमदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन नबिय्यीन नहीं तस्लीम करते और उनकी इज़्ज़त नहीं करते लेकिन इस सब के विपरीत अहमदी तो पूरी दुनिया में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का परचार कर रहे हैं और जिस तरह जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा ने क़ुरआन-ए-करीम की तालीम और बार-बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन अपने भाषण में किया वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का मुँह बोलता सबूत है।

ये दूसरी चीज़ें बाद में बीच में आ गई थीं। बहरहाल अब आगे फिर प्रैस ऐंड मीडीया का वर्णन है। प्रैस ऐंड मीडीया के माध्यम से भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कवरेज हुई। और बी-बी सी ने अपने रीजनल टी.वी में दिया, बी-बी सी साउथ ने दिया, एक डाकूमैंटरी भी चलाई और ये रिपोर्ट बी-बी सी वर्ल्ड ने भी प्रसारिति की जो दो सौ देशों में देखा जाता है। इस के अतिरिक्त बी-बी सी नैशनल न्यूज़ चैनल पर भी यह ख़बर प्रसारित हुई और repeat भी होती रही। कहते हैं कि निश्चित रूप से कितने अफ़राद तक संदेश पहुंचा यह बताना तो मुश्किल है लेकिन एक अनुमान के अनुसार यह कवरेज बावन मिलियन अफ़राद तक थी। चालीस वैबसाईटस ने जलसे की ख़बर प्रसारित की। उनकी अपनी रीडर शिप सत्ताईस मिलियन अफ़राद है। बीस अख़बारात इत्यादि में जलसा के बारे में आर्टीकल प्रकाशित हुए, उस की रीडर शिप सात लाख पैंतीस हज़ार है। जलसे के हवाले से सोला रेडीयो प्रोग्राम प्रसारित हुए, सोला मिलियन लोगों तक संदेश पहुंचा। इसी तरह बारह टेलीविज़न चैनल्ज़ ने जलसे की ख़बर प्रसारित की जिन की कवरेज बाईस लाख अफ़राद तक है। इन समस्त माध्यमों के अतिरिक्त सोशल मीडीया के माध्यम से भी अंदाज़न तरेसठ लाख अफ़राद तक संदेश पहुंचा।

ढाका से अमीर साहिब बंगला देश कहते हैं ढाका की मर्कज़ी मस्जिद नारायण गंज, ब्रहमन बाड़ीह, चटागाइंग में लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से शमूलियत हुई। कहते हैं कि रिपोर्ट के अनुसार आठ सौ से अधिक ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों ने जलसे की कार्रवाई सुनी और इस्तिफ़ादा किया। फिर कहते हैं बंगलादेश के दस ऑनलाइन पोर्टलज़ और अख़बारों में जलसा की ख़बरें तसावीर के साथ प्रकाशित हुईं। उनमें से तीन बहुत मशहूर और मारूफ़ हैं। बहुत ही मुहतात अंदाज़े के अनुसार ऑनलाइन पोर्टलज़ और अख़बारों के माध्यम से कम अज़ कम चोवन लाख अहबाब ने ये ख़बरें पढ़ी हैं।

एम. टी. ए. इंटरनैशनल के माध्यम जो कवरेज है वह ये है कि यूट्यूब पर पंद्रह मिलियन से अधिक लोगों ने विज़िट किया। तक़रीबन पाँच लाख घंटे यूट्यूब के माध्यम से एम. टी. ए. देखा गया। इंस्टाग्राम पर पैंतीस हज़ार लोगों ने एम. टी. ए. का पेज देखा और एक इशारीया सात (अलिफ1.97) मिलियन लोगों तक उस की रसाई हुई। टविटर पर एक लाख से अधिक लोगों ने एम. टी. ए. का पेज देखा। पैंतीस हज़ार से अधिक लोगों ने इसको पसंद किया और आगे दूसरों को पहुंचाया। फेसबुक के माध्यम भी साढ़े पाँच लाख से अधिक अहबाब तक संदेश पहुंचा। इसी तरह एम. टी. ए. की अपनी वेबसाइट को एक लाख मर्तबा देखा गया। एम. टी. ए. आन डीमांड के माध्यम भी दो लाख से अधिक अहबाब ने जलसे को देखा।

तो ये मुख़्तसर सी कुछ बातें थीं इस पर भी काफ़ी वक़्त लग गया। अल्लाह तआला इस जलसा के लम्बे समय वाले परिणाम भी पैदा फ़रमाए और पवित्र रूहों को अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम की तरफ़ पहले से बढ़कर तवज्जा पैदा हो और तथाकथित ओलमा के छल से जमाअत को और समस्त पवित्र रूहों को सुरक्षित रखे।

☆ ☆ ☆ ☆

Virtual मुलाक़ात

अल्लाह तआला उनको बेहतरीन ख़ादिम सिलसिला बनाए जो अपने रोशन अख़लाक़ से दूसरों के लिए उदाहरण बनें
और इंडोनेशिया के किनारों तक अहमदियत के संदेश को अहसन रंग में फैलाने वाले बनें (हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़)
प्यारे हुज़ूर जब हमारे मध्य उपस्थित थे तो मेरे दिल में आयत इस्तख़लाफ़ का ख़्याल आ रहा था कि किस तरह ख़ुदा ने ख़िलाफ़त के माध्यम से हमारी ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदल दिया। (प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया)

जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया के विद्यार्थी और फ़ारिग़-उल-तहसील मुरब्बियान की हज़रत अमीर-ऊल-मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया और विशेषता जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया के लिए यह बहुत ख़ुशी की घड़ी थी कि इस दीनी दरसगाह के समस्त विद्यार्थी, अध्यापक और इस वर्ष फ़ारिगुल तहसील होने वाले मुरब्बियान की अपने प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात हुई। यह मुलाक़ात 31अक्तूबर 2020 को इंडोनेशियनक के वक़्त के अनुसार शाम 7 बजे हुई। 75 मिनट तक प्यारे आक़ा से सीधे क़ीमती नसाएह हासिल करने और विशेष दुआ करवाने की तौफ़ीक़ मिली। जब यह शुभ संदेश हमें पहुंचा तो बे-इंतिहा ख़ुशी होने के साथ-साथ हमारे दिल दुआओं और इस्तिग़फ़ार में व्यस्त रहे कि अल्लाह तआला हमारी कमज़ोरीयों और कोताहियों की पर्दापोशी फ़रमाए। यह प्रोग्राम "बैतुल आफियत" लजना हाल में हुआ जो बोगो पश्चिमी जावा में वाक़्य है। यह एक ख़ूबसूरत, तीन मंज़िला बिल्डिंग है जिसकी मुरम्मत और सुन्दरता सजावट के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ के साथ उस का नाम "बैतुल आफियत" अता फ़रमाया है। इस बाबरकत प्रोग्राम में आदरणीय नैशनल अमीर साहिब जमाअत इंडोनेशिया भी शामिल थे।

आदरणीय प्रिंसिपल साहिब जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया लिखते हैं कि मुलाक़ात से पहले मुझे बार-बार यही फ़िक्र हो रही थी कि मौसम-ए-बरसात और बिजली के मसला की वजह से मुलाक़ात में कोई मुश्किलात न पेश आएं। दूसरी फ़िक्र यह थी कि जब विद्यार्थी जामिआ अहमदिया प्रश्न पेश करेंगे तो ऐसा न हो कि वे उर्दू से कम वाक़फ़ीयत की वजह से हुज़ूर अनवर को अपनी बात न समझा पाएं और हुज़ूर-ए-अनवर को तकलीफ़ पहुंचे। ये फ़िक्र मज़ीद दामनगीर हुई जब हुज़ूर अनवर तशरीफ़ लाए और दरयाफ़त फ़रमाया कि मैंने किस भाषा में बात करनी है, अंग्रेज़ी या उर्दू? तथा फ़रमाया कि इंडोनेशियन भाषा तो मुझे नहीं आती। तो मैंने गुज़ारिश की कि उर्दू में ही फ़रमाएं कि हमें इन शा अल्लाह बहुत हद तक समझ आजाएगी। फिर क्लास के शुरू में ही हुज़ूर अनवर ने आवाज़ की कुछ ख़राबी के सम्बन्ध में वर्णन फ़रमाया तो मैं इतना घबरा गया कि बावजूद इस के कि एम. टी. ए. वालों ने बार-बार इशारे से मुझे तवज्जा दिलाई कि कैमरे ही की तरफ़ नज़र रखनी है परन्तु फिर भी मैं स्क्रीन की तरफ़ देखता रहा। बहरहाल एक मुबारक और पुर शौकत वजूद के दरबार में हाज़िर होने की वजह से दिल में रोब तारी था। तिलावत और नज़्म और तक़रीर के बाद दिल में इस तरह सुकून पहुंचा कि जब प्रिय फ़ख़रुल रिजाल ने तक़रीर की और हुज़ूर अनवर ने तक़रीर के सम्बन्ध में दरयाफ़त फ़रमाया कि क्या तक़रीर उर्दू में लिखी हुई है या इंडोनेशियन में? तो मैंने अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर उर्दू में लिखी हुई है। इस पर हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक फ़रमाया कि अच्छा ठीक है। तो यह उत्तर मेरे लिए तसल्ली बख़श था।

ऐसे बाबरकत लमहात हमें यूं नज़र आते हैं कि जैसे बाप और बेटे का रिश्ता है और बच्चे सीधे अपने रुहानी पिता से फ़ैज़ हासिल कर रहे हैं। इस लिए जब एक तालिब-ए-इलम ने प्रश्न पेश करने के लिए सलाम करके "प्यारे हुज़ूर" कहा तो हुज़ूर ने तुरंत उत्तर दिया वाअलैकुम अस्सलाम प्यारे बच्चो। यह कैसी ख़ुशी की घड़ी थी प्यारे हुज़ूर जब हमारे मध्य मौजूद थे तो मेरे दिल में फरमान-ए-ख़ुदा अर्थात आयत इस्तख़लाफ़ का ख़्याल आ रहा था कि किस तरह ख़ुदा ने ख़िलाफ़त के माध्यम से हमारी ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदल दिया।

फिर जब जगह के सम्बन्ध में हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया और हुज़ूर को "बैतुल आफियत" लजना हाल का दृश्य वीडीयो के माध्यम से दिखाया गया तो हुज़ूर ने न केवल इमारत बल्कि हमारे देश की ख़ूबसूरती की भी तारीफ़ की जिससे मुझे बहुत ख़ुशी हुई और मैं ने सहसा हुज़ूर को इंडोनेशिया में तशरीफ़ लाने के लिए दावत पेश की।

आख़िर में हुज़ूर अनवर ने जामिया की शिक्षा पूर्ण करने वाले मुरब्बियान के सम्बन्ध में दरयाफ़त फ़रमाया। मैंने अर्ज़ किया इस वर्ष 4 शाहिदीन और 6 मुबश्रीन जामिया की शिक्षा पूर्ण करने वाले हुए हैं जिस पर हुज़ूर ने उनके लिए विशेष दुआ की और समस्त विद्यार्थी के लिए भी दुआ की जिनकी कुल संख्या 106 है कि अल्लाह तआला उनको बेहतरीन ख़ादिम-ए-सिलसिला बनाए जो अपने रोशन अख़लाक़ से दूसरों के लिए उदाहरण बनें और इंडोनेशिया के किनारों में अहमदियत के संदेश को अहसन रंग में फैलाने वाले बनें। आमीन।

अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला के निर्धारित फ़र्मूदा ख़लीफ़ा हमारे मुल्क में स्वयं तशरीफ़ ला कर उसे बरकत बख़्शें और इंडोनेशिया के अहमदी अपने प्यारे इमाम से सीधे मुलाक़ात करने और फ़ैज़ उठाने की तौफ़ीक़ पाऊं। आमीन (रिपोर्ट : फ़ज़ले उम्र फ़ारूक़ी, नुमाइंदा इंटरनैशनल)

(धन्यवाद सहित, अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 20 नवंबर2020)

Virtual मुलाक़ात

डेढ़ घंटे की मुलाक़ात ने रूह तक को सेराब कर दिया और हर एक में सिलसिला की ख़िदमत के लिए एक बिजली जेसी शक्ति भर गई

नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया जर्मनी की हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात 18 अक्तूबर 2020 ई

नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया जर्मनी की हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात 18 अक्तूबर 2020 ई. को जमाअत अहमदिया जर्मनी की नैशनल मजलिस-ए-आमला के मैंबरान को अपने प्यारे आक़ा से वर्चूअल मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अलहमदु लिल्लाह। जिन मीटिंग की तारीख़ तै हो गई तो आदरणीय अमीर साहिब ने आमिला के मैंबरान को जहां यह ख़ुश-ख़बरी सुनाई वहीं मीटिंग से सम्बन्धित कुछ ज़रूरी उमूर की तरफ़ तवज्जा दिलाई और दुआ और सदक़ा की हिदायत भी फ़रमाई, इसलिए जमाअत अहमदिया जर्मनी ने 7 बकरे सदक़े किए। मुलाक़ात शुरू हुई तो प्यारे आक़ा ने प्रेम से फ़रमाया कि आप सबसे इकट्ठी मुलाक़ात किए हुए पूरा एक वर्ष हो गया है। इश्क़ करने वाले तो अपने आक़ा की जुदाई में तड़प ही रहे थे लेकिन इस बात ने कि प्यारे हुज़ूर अपने चाहने वालों की भावनाओं का इस क़दर ख़्याल रखते हैं हमारे ईमानों को ताज़ा कर दिया। मुलाक़ात के दौरान एक अजीब कैफ़ीयत थी। हुज़ूर का अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू कुछ ऐसा था कि यूं लगता था जैसे आमने सामने बैठे हैं। हुज़ूर ने हर एक सैक्रेटरी को उस के विभाग के हवाले से तफ़सीली रहनुमाई फ़रमाई। हर एक को इस तरफ़ तवज्जा दिलाई कि अपने कामों को समझ कर पूरी लगन और मेहनत से काम करें और नतायज हासिल करने के लिए आजिज़ी इख़तियार करते हुए अपनी सब काविशों को अल्लाह की तरफ़ मोड़ दें।

बद तर बनो हर एक से अपने ख़्याल में
शायद इसी से दख़ल हो दारुल विसाल में

मुलाक़ात का समय तो पर लगा कर उड़ गया। तक़रीबन डेढ़ घंटा तो यूं लगा जैसे केवल चंद मिनट थे लेकिन रूह तक को सेराब करने के साथ-साथ हर एक में सिलसिले की ख़िदमत के लिए एक नई बिजली जेसी शक्ति भर गई। अल्लाह करे कि हम सब प्यारे आक़ा की आशाओं के अनुसार काम करने वाले और उनके सुलतान-ए-नसीर बनने वाले हों।

(मुहम्मद इलयास मजूका,जनरल सैक्रेटरी जमाअत जर्मनी)

(धन्यवाद सहित, अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 23 अक्तूबर2020)

पृष्ठ 2 का शेष

है और ख़लिफ़ा का आपस में ऐसा मतभेद जायज़ है।

जैसा कि मैंने वर्णन किया कि मेरा मौक़िफ़ इस मुआमला पर यही है कि दुश्मन की ऐसी औरतों से शारीरिक सम्बन्ध के लिए निकाह की ज़रूरत होती थी और मेरा इस समय में यही जमाअती मौक़िफ़ मुतसव्वर होगा लेकिन हो सकता है कि आने वाला ख़लीफ़ा मेरे इस मौक़िफ़ से मतभेद करे। यदि ऐसा होता है तो उस वक़्त वही जमाअती मौक़िफ़ मुतसव्वर होगा जो उस वक़्त के ख़लीफ़ा का होगा।

इसके अतिरिक्त यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इस ज़माना में कहीं कोई ऐसी जंग नहीं हो रही जो इस्लाम को मिटाने के लिए लड़ी जा रही हो और इस में मुस्लमान औरतों से ऐसा सुलूक किया जा रहा हो कि उन्हें लौंडियां बनाया जा रहा हो इसलिए अब इस ज़माना में मुस्लमानों के लिए भी ऐसा करना नाजायज़ और हराम है।

आपने अपने ख़त में दूसरी शिकायत यह लिखी है कि लजना इमाइल्लाह की इल्मी रैली के अवसर पर एक दस्तावेज़ी फ़िल्म के शुरू में एक डेढ़ मिनट का म्यूज़िक चलाया गया।

जैसा कि आपने तहरीर किया है कि यह एक दस्तावेज़ी फ़िल्म थी। चूँकि यह दस्तावेज़ी फ़िल्म थी जो हमने तैयार नहीं की बल्कि इस फ़िल्म को बनाने वाले ने इस में म्यूज़िक शामिल किया था, हम उसे कैसे इस फ़िल्म में से काट सकते हैं, लिहाज़ा इस में कोई हर्ज की बात नहीं। दरअसल यह हदीस में वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ दज्जाल का वह धुआँ है जिस से बचना असम्भव है।

जहां तक हमारे अपने तैयार करदा प्रोग्रामों या हमारे एम.टी.ए का मुआमला है तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एम.टी.ए भी और हमारे तैयार करदा समस्त प्रोग्राम भी म्यूज़िक से पुर्णत: पाक होते हैं और उनमें ऐसी कोई ग़ैर शरई बात नहीं होती। और यह वह उदाहरण है जिसे दीन-ए-हक़ के तौर पर पेश किया जाना चाहिए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यही इस्लामी नमूना एम.टी.ए के समस्त प्रोग्रामों में हर जगह पेश किया जाता है।

नमाज़ पढ़ने की जगह बिठाने की बजाय मस्जिद के आख़िर पर कुर्सीयों पर बिठाएँ।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया के विद्यार्थियों की 31 अक्तूबर 2020 ई. को होने वाली virtual मुलाक़ात में एक विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि इस ज़माना में बहुत से लोग जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में उपहास करते हैं, हमारी तरफ़ से उनका उत्तर किस तरह होना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया :

उत्तर : पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुद फ़र्मा दिया कि إِنِّيْ مُهِيْنٌ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ। जो लोग तेरी अपमान करते हैं, में उनका अपमान करूँगा। चाहे वे उनको इस दुनिया में ज़लील करे या मरने के बाद वे अपमानित होंगे। या उनकी औलादें ज़लील होंगी। जो तो जान-बूझ के मज़ाक़ करते हैं, उनसे तो अल्लाह तआला आप ही निपटेगा। लेकिन हमारा response इस में यही है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि तुमने सब्र से काम लेना है। और किसी सख़्त आदमी का उत्तर सख़्ती से नहीं देना। तुमने लड़ाई नहीं करनी। बे-शक मेरी मुहब्बत तुम पर बड़ी ग़ालिब है लेकिन तुमने लड़ाई नहीं करनी। देखो आजकल हमें सबसे ज़्यादा प्यारे तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं नाँ? मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी ज़्यादा हमें प्यारे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। और आजकल देखो फ्रांस में और कुछ यूरोपीयन मुल्कों में उनके चित्र बना के मज़ाक़ उड़ाया जाता है। उस पर हमारा response क्या है? हम यह कहते हैं कि हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद भेजें। और जब हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं तो ऑल-ए-मुहम्मद पर दुरूद भेजते हैं। ऑल-ए-मुहम्मद भी इस में शामिल हो जाती है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सबसे बड़ी ऑल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं। आप वह हैं जो उनके के सबसे ज़्यादा ऑल में शुमार हो सकते हैं। इसलिए हमारा काम यह है कि जब लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं तो हम दुरूद पढ़ें। पहली बात तो यह है। चाहे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मज़ाक़ हो या आपके ग़ुलाम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हो। हमें चाहिए कि दुरूद पढ़ा करें।

नंबर दो यह कि अपने उदाहरण ऐसे बनाएँ कि मज़ाक़ उड़ाने वाले ख़ुद बख़ुद ख़ामोश हो जाएं। वे देखें कि हम मज़ाक़ उड़ाते हैं लेकिन ये लोग तो हक़ीक़ी इस्लाम की शिक्षा हमें बताते हैं। ये लोग हैं जो प्यार और मुहब्बत को फैलाते हैं। हम उनसे नफ़रत की बात करते, ये हमारे से प्यार की बात करते हैं। क़ुरआन शरीफ़ में भी यही लिखा है कि كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ तुम यदि सही तरह अख़लाक़ से पेश आओगे तो वे जो तुम्हारे दुश्मन हैं वे तुम्हारे जांनिसार दोस्त बन जाऐंगे। इसलिए हमारा response यही है कि हम ख़ामोशी से अपने कर्म ठीक करें, अपनी हालतों को बेहतर करें, अल्लाह तआला के आगे झुकें। दुआ करें कि अल्लाह तआला उन लोगों की हालतों को बेहतर कर और यदि अल्लाह के नज़दीक उन लोगों की हालत बेहतर नहीं होनी तो फिर अल्लाह तआला हमें उन लोगों से निजात दे और उनके मुँह-बंद कर देता कि ये हमारे प्यारों का मज़ाक़ न उड़ाएं। न मसीह मौऊद का और इस से बढ़कर रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मज़ाक़ उड़ाएं। और हम ख़ुशीयां देखने वाले हों। इस दुनिया में जब रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त क़ायम होती है तो हमें ख़ुशी होती है। जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम हैं, उनकी इज़्ज़त क़ायम होती है तो हमें ख़ुशी होती है। तो हमें दुआ करनी चाहिए कि हम उन लोगों की इज़्ज़त को क़ायम होता देखें ताकि हमें ख़ुशी पहुंचे। अल्लाह से माँगना है। हमने ख़ुद न डंडा पकड़ना है, न राइफ़ल पकड़नी है, न तोप पकड़नी है और न छुरा पकड़ना है। कुछ नहीं करना। हमने अल्लाह के आगे झुकना है। अपनी हालतों को बेहतर करना है और दुरूद शरीफ़ ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना है।

(शेष....................)

(धन्यवाद् के साथ अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 दिसंबर2020)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ
Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफ़त का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ
मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 16 September 2021 Issue No.37

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

साथी आज़ाद होते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरक़्क़ी मिलती है। एक अज़ीमुश्शान जमाअत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हो जाती है और क़ुरआन-ए-मजीद की पूर्ण हिफ़ाज़त होती है और आज तक हो रही है और होती रहेगी। क्या यह बेनज़ीर हिफ़ाज़त दुनिया के और किसी धार्मिक पुस्तक को हासिल हुई है? सर विलियम मीयूर अपनी पुस्तक लाईफ़ आफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में बेहस के बाद लिखता है :

...इस में संदेह नहीं कि यह वही क़ुरआन है जो मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम) ने हमें दिया था। हम निहायत मज़बूत क़ियासात के आधार पर कह सकते हैं कि हर एक आयत जो क़ुरआन में है वह असली है मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) कीबिना परिवर्तन वाली लेखनी है। हमारे पास हर एक किस्म की ज़मानत मौजूद है, अंदरूनी शहादत की भी और बैरूनी की भी कि यह पुस्तक जो हमारे पास है वही है जो ख़ुद मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने दुनिया के सामने पेश की थी और इसे इस्तिमाल किया करते थे।

नोल्डक का कथन है : मुम्किन है कि तहरीर की कोई मामूली ग़लतियां (तर्ज़ तहरीर) हों तो हों लेकिन जो क़ुरआन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुनिया के सामने पेश किया था उस का मज़मून वही है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम) ने पेश किया था। जबकि उसकी तर्तीब अजीब है। यूरोपीयन उल्मा की यह कोशिशें कि वे साबित करें कि क़ुरआन में बाद के ज़माना में भी कोई तबदीली हुई है बिल्कुल नाकाम साबित हैं

क़ुरआन-ए-मजीद के अल्लाह के ओर से होने पर कितनी बड़ी शहादत है कि क़ुरआन-ए-करीम उम्मियों (अपढ़ लोगों) में आता है और हर तरह से सुरक्षित रहता है परन्तु तौरात और इंजील अपने ज़माना की इलमी क़ौमों में आएं लेकिन सुरक्षित नहीं रह सकें। मीयूर इसके सम्बन्ध में क्या ही अफ़सोसनाक शब्दों में लिखता है :

मुस्लमानों की बिल्कुल पाक और ग़ैर तबदील शूदा पुस्तक और हमारी कुतुब के मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों के बाहमी इख़तिलाफ़ का मुक़ाबला करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कि दो ऐसी चीज़ों का मुक़ाबला किया जाए जिनमें बाहमी कोई भी सामानता नहीं।

अब प्रशन यह है कि क्या यह एक इत्तिफ़ाक़ है कि क़ुरआन शरीफ़ आज तक सुरक्षित है? इस्लामी तारीख़ बताती है कि यह इत्तिफ़ाक़ नहीं बल्कि उसकी ज़ाहिरी हिफ़ाज़त अल् किताब और कराआन मूबीन के दो माध्यमों से होती है जिनका वर्णन इस सूरत के शुरू ही में किया गया है। नाज़िल होने के शुरू से ही उसकी आयात लिखी जाने लगीं और इस की हिफ़ाज़त होती गई और फिर अल्लाह तआला ने उसे ऐसे प्रेमी अता किए जो उसके एक-एक शब्द को हिफ़्ज़ करते और रात-दिन ख़ुद पढ़ते और दूसरों को सुनाते थे। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम के किसी न किसी हिस्से का नमाज़ों में पढ़ना अनिर्वार्य निर्धारित कर दिया और शर्त लगा दी कि पुस्तक में से देख कर नहीं बल्कि याद से पढ़ा जाए। अगर कोई कहे कि यह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक बात सूझ गई थी तो हम कहते हैं कि यही बात ज़रतुशत, मूसा और वेद वालों को क्यों नहीं सूझी। मालूम होता है कि इस का सूझाने वाला कोई और है। कोलंबस जब अमरीका को दरयाफ़त करके वापिस आ गया तो लोगों ने कहा कि यह कौन सी बड़ी बात है हम जाते तो हम भी अमरीका को दरयाफ़त कर लेते। परन्तु कोलंबस ने उसके जवाब में एक अण्डा दे कर कहा कि तुम यह अण्डा मेज़ पर खड़ा कर दो। सबने कोशिश की परन्तु वह खड़ा नहीं हुआ। आख़िर में कोलंबस उठा और उसने एक सूई से उस में छेद किया और उस से जो लुआब निकला उसकी मदद से उसे मेज़ पर खड़ा कर दिया। इस पर लोगों ने कहा कि ऐसा तो हम भी कर सकते थे। कोलंबस ने कहा कि अमरीका की दरयाफ़त के बारे में तो तुम ने कह दिया कि हमें अवसर नहीं मिला परन्तु इस बारह में तो तुम को अवसर मिल गया था क्यों नहीं तुमने अपनी अक़्ल से काम लिया। अत: ऐसा ही

पृष्ठ 1 का शेष

इन्सानी ज़िन्दगी का क्या मक़सद है और इसके प्राप्त करने का क्या मार्ग है? إِيَّاكَ نَعْبُدُ मानो इन्सानी फ़ित्रत का नूल उद्देश्य और लक्ष्य है और वह إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (अल-फ़ातिहा:5) के बिना पूरा नहीं होता परन्तु إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ को إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ पर प्राथमिकता करके यह बताया है कि पहले ज़रूरी है कि जहां तक इन्सान की अपनी ताक़त, हिम्मत और समझ में हो,ख़ुदा तआला की रजामंदी के मार्गों के धारण करने में चेष्टा और कोशिश करे और ख़ुदा तआला की दी गई शक्तियों से पूरा काम ले और इसके बाद फिर ख़ुदा तआला से इस की सम्पूर्णता और नतीजा निकलने वाला होने के लिए दुआ करे। इन्सानी ज़िन्दगी का लक्ष्य और उद्देश्य सीधे मार्ग पर चलना और इस की अभिलाषा है। जिसको इस सूरत में इन शब्दों में बयान किया गया है।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अल-फ़ातिह:6,7)

अल्लाह हम को सीधा मार्ग दिखा। उन लोगों की जिन पर तेरा इनाम हुआ। यह वह दुआ है जो हर समय, हर नमाज़ में और हर रकअत में मांगी जाती है। इतना बार-बार पढ़ना ही इसके महत्व को प्रकट करता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

हम भी कहते हैं कि वे माध्यम हिफ़ाज़त के जो क़ुरआन के बारे में इस्तिमाल किए गए आख़िर क्यों क़ुरआन-ए-करीम के पेश करने वाले को ही सूझे क्यों दूसरी जमाअतों ने उसे इस्तिमाल नहीं किया।

यह भी याद रहे कि ऐसे आदमियों का उपलब्ध होना जो उसे हिफ़्ज़ करते और नमाज़ों में पढ़ते थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताक़त में नहीं था। उनका मुहय्या करना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इख़तियार से बाहर था। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ कि ऐसे लोग हम पैदा करते रहेंगे जो उसे हिफ़्ज़ करेंगे। आज इस ऐलान पर तेराह सौ साल हो चुके हैं और क़ुरआन-ए-मजीद के करोड़ों हाफ़िज़ गुज़र चुके हैं। कुछ यूरोपीयन न वाक़फ़ीयत की वजह से कह दिया करते हैं कि इतना बड़ा क़ुरआन किस को याद रहता होगा। परन्तु क़ादियान ही में कई हाफ़िज़ मिल सकते हैं जिन्हें अच्छी तरह से क़ुरआन याद है। इस लिए मेरे बड़े लड़के नासिर अहमद सल्लमा हुल्लाहो तआला ने भी ग्यारह साल की आयु में क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ कर लिया था। असल बात यह है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद को अपने ख़ास तसर्रुफ़ से ऐसे अलफ़ाज़ और ऐसी तर्तीब से नाज़िल फ़रमाया है कि वह सहूलत से हिफ़्ज़ हो जाता है। क़ुरआन शेअर नहीं परन्तु शेअर से भी ज़्यादा जल्दी याद हो जाता है उर्दू या अंग्रेज़ी की इबारतों की निसबत क़ुरआन शरीफ़ के हिफ़्ज़ करने पर आधा वक़्त भी खर्च नहीं होता।

(तफ़सीर-ए- कबीर भाग 4 पृष्ठ 15 से 18 प्रकाशन क़ादियान 2010)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad